गुलदस्ताबाँकेलाल

मतबअ इफ़्तख़ार देहलीमें बएहतमा
म मोहम्मद इब्राहीम केसे छापीगई

नाम पुस्तक	क़ीमत	नाम पुस्तक	क़ीमत	नाम किताब	क़ीमत	नाम क़ीमत
गुलज़ार सखुन	।)	लावनी मनोहर	·	स्वाँग गोपीचंद	-)	जादू के तमाशे की
नुर्रा प्रथम भाग	·	बाग प्रथम भाग	=)	स्वाँग प्रह्लाद	-)	दूसरी किताब
तथा दूसरा भाग	।)	तथा दूसरा भाग	।)	क़िस्से अलाउद्दी	।=)	इस किताब में
तथा तीसरा भाग	।)	तथा तीसरा भाग	-)	न चिराग़ अलफ़	·	लागे हैं जो होली
तथा चौथा भाग	।)	लावनी रिसाल	·	लैला का क़ीमत	·	और दिवाली -
बुद्धि बिलास	≡)	सागर क़ीमत	-॥)	बीरबल नामा	-॥)	मुहर्रमों में लोग
प्रथम भाग ··	·	लावनी ब्रह्म प्र	·	बादशाह और	·	दिखाया करते हैं
तथा दूसरा भाग	≡)	[illegible]श क़ीमत	-)	बीरबल के सवा	·	रिसालः किरक
तथा तीसरा भाग	≡)	लावनी हरदिल	·	ल जवाब प्रथम भा	·	ट इसमें गेंद बल्ला
तथा चौथा भाग	≡)	पसंद क़ीमत	=)	तथा दूसरा भाग	-॥)	खेलने के क़ायदे
ख्याल चौबीसी	·	स्वाँग सौदागर	·	तथा तीसरा भाग	=)	रिसाले वरज़िस
प्रथम भाग	=)	बच्चा बड़ा क़ीम	·	तथा चौथा भाग	≡)	पहलवानी कर
तथा दूसरा भाग	=)	स्वाँग बसंत कुंवर	=)	ताश बत्तीसी नाट	=॥)	ने के क़ायदे हैं
तथा तीसरा भाग	=)	स्वाँग चित्र मुकुट	=)	क इसमें ताश के	·	कुलियात नज़ीर
तथा चौथा भाग	=)	स्वाँग मोरध्वज	-।)	तमाशे हैं जो अंग	·	मजमेउल अम्सा
[illegible] ख्याल	·	स्वाँग नौटंकी	-)	रेज़ तमाशा दिखाते हैं।		अशार क़ीमत ··
[illegible] क़ीमत ···	।-)	स्वाँग निहालदे	=॥)	तथा दूसरा भाग	-॥)	रिसाले मनरंज
गुलज़ार सखुन	·	स्वाँग सरवर नीर	-॥)	नक़्श सुलेमानी	-)	ये किताब सतरं
कलगी क़ीमत	=॥)	स्वाँग ढोला मारू	-॥)	नाटिका क़ीमत	·	ज सीखने की है
लावनी चेतनशा	-॥)	स्वाँग बज्र मुकुट	=)	सकुंतला नाटक	≡)	रमल सिंधु इसमें
लावनी नवीन		स्वाँग ज़ाहरपीर	-॥)	फ़र्रुख़ सभा नाट	-)	इसमें तरह २ के
बिलास प्रथम		स्वाँग महाभारत	-)	इंदरसभा नाटक	=॥)	प्रश्न और तिल
भाग क़ीमत ··	=॥)	स्वाँग गुल बकावे	-)	परियों की हवाई	·	और अंग फड़क
तथा दूसरा भाग	≡)	ली का क़ीमत	·	मजलिस क़ीमत	≡)	ने का कुल बयान
तथा तीसरा भाग	=॥)	स्वाँग देवर भाभी	-)	और बहुत नाट		क़िस्से डब्बा का
लावनी ब्रह्मज्ञान	≡)	स्वाँग तीन सौक	-।)	क परस्तान के		क़िस्सा क़मरुज़ भ
प्रथम भाग ···	·	तों का झगड़ा ·	·	हमारे यहाँ नाग		ठियारे का क़ीमत
तथा दूसरा भाग	।-)	स्वाँग राजा प्रताप	·	री में छपते हैं जो		क़िस्से हारूँरशीद
तथा तीसरा भाग	≡)	सिंह क़ीमत ''	-)	बंबई की कंपनी		गुलशन उमरा
तथा चौथा भाग	-॥)	स्वाँग सिया स्वयं	·	यां तमाशा दिखा		इसमें दरबार दे
तथा पांचवां भाग	-॥)	वर बड़ा सुखल	·	या करती हैं।		हली का हाल है
इन सबों का मुस		ल कल क़ीमत ·	=॥)	जादू के तमाशे	।)	जो कि सन् १८७७
न्निफ़ बाबा बना		स्वाँग कारक	-)	की पहली किता	·	में हुआ था पे २
रसी गिर गुसाईं हैं		स्वाँग हरीचंद	-॥)	ब क़ीमत ····	·	राजा आये उनकी तसवीरें नकशा

यह नवीन पुस्तक देखो

॥ श्रीः ॥

गुलदस्ता बाँकेलाल

यानी

लाला बाँकेलाल वैश्य अग्रवाल । वल्द लाला बलदेवदास उस्ताद । साकिन गंज कलाँ रियासत रामपुर रुहेलखंड के बनाए ख्याल मरहठी हिन्दी व उर्दू व गज़लें गानेके वास्ते दंगलमें गुरू दुर्गादास उस्ताद तोड़े वालेके अखाड़े वालोंके तथा उनके इष्ट मित्रोंके गजलें संपूर्ण सज्जन ।
मनुष्योंके आनंद हेत

तिसे

उन्हीं लाला बाँकेलाल ग्रन्थ कर्त्ताकी आज्ञानुसार लाला नारायणदास जंगलीमल ने मतबअ इश्तहार देहली में बएहत्माम मोहम्मद इब्राहीम के सेवहन शुद्ध पूर्वक छपवाई प्रथम बार मिती फाल्गुण सुदी ५ बृहस्पति
सम्वत १९५८

भावप्रकाश संस्कृत मूल भाषा टीका है अति उत्तम नीन जिल्द में ४) माधवनिदान संस्कृत मूल भाषा टीका सहित शुद्ध १।) हंसराज निदान संस्कृत मू॰ भाषा टीका चित्र सहित ॥) योगचिंतामणि सं॰ मू॰ भाषा टीका सहित अति शुद्ध १।) रसराजसुंदर सं॰ मू॰ भाषा टीका शुद्ध ४) वैद्य रत्नाकर सं॰ मू॰ भा॰ टीका यह ग्रंथ चरक सुश्रुत भावप्रकाश आदि ग्रंथों से सार लेकर बनाहै- ५।)

निघण्टु रत्नाकर भाषामें बड़ा ६) अनुपान चिंतामणि सटी॰ ।=) चिकित्सा कल्पद्रुम छा॰ बं॰ ।=) वैद्यक कल्पद्रुम छा॰ बंबई॰ भाषाटीका ४॥) माधोनिदान केवलमूल ।) श्रीरणवीरप्रकाश क्री॰ ७) द्रव्यगुण वाग्भट का एक भाग छा॰ क॰ २) वंकसेन छापा कलकत्ता २०) इलाजुलगुरबा कीमत ॥) इलाज जिस्मानी कीमत ।) रिसालः आनशक मौज़ा कीमत- ।) अर्क प्रकाश रिसालः ।=) तिब्ब प्रभाकर तर्जुमा तिब्ब सफीका ।) तिब्बे अहसानी तर्जुमा क़ी॰ ।=) रसायनप्रका॰ ।)

पुस्तक मिलनेका- देहली दरीबा कलाँ कूचा मसजिद में नारायनदास जंगलीमल

श्रीगणेशायनमः॥

गुलदस्ता बांकेलालकृत

॥ लिख्यते ॥

दीबाचा

प्रणाम है उस सच्चिदानन्द आनन्द कन्द पर ब्रह्म परमेश्वर को कि जिसके पलक मात्रमें यह संसार बार बार निर्मित और लय हुवा करताहै। और हमेशा शेषजी हज़ार मुखसे नित नये नाम उच्चारण करते रहतेहैं और वेद जिसको नेतिनेति कहतेहैं उसकी महिमा यानी तारीफ़ को कोई लिख सके या कह सके अथवा जान सके तो इतनी किसकी सामर्थ्य है कि जो लिख सके या कह सके अथवा जान सके अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेशादि को लेकर कोई भी नहीं लिख सका है बस मालूम होवे कि यह तुच्छ बुद्धि वाला बांकेलाल छन्द [illegible] और अग्रवाल साकिने शहर मुरादाबाद [illegible] रामपुर कुहेलो मोहल्ले गंज कलां का है दस्तबस्ता अरज करता है फ़न शेर यानी सखुने मं[illegible] [illegible] में इल्तमास रखताहै कि जहांतक [illegible] किसी तरह की गलती देखें तो यक़ीन कामिल

है कि उसको अपने दामिन बख़्शिश से छुपालें
और मौरिज़ न हों क्योंकि मुझको इतनी कुव्वते ता
क़त कहां कि मैं शायरी करूं और न कुछ मुझको
दावा है बल्कि अरबाब सखुन के आगे मूं चिड़ा
ना है. नाचार हूं कि चन्द अहबाबने मुझसे फ़र
मायश की तो मैंने उनसे कहा कि मुझको इसमें
कुछ दख़ल नहीं है लेकिन उन्होंने मेरे कहनेका
अस्ला ख़्याल न किया और पैदरपै इसरार की
तो मजबूर होकर मैंने इस कामको परमेश्वरका
नाम लेकर शुरू किया उसने अपनी कृपासे पूरा
कर दिया अब कहीं इसमें मेरी चूक को कोई कवी
श्वर या पंडित अथवा सुन्दर बुद्धीवाले सुज्जन देखें
तो अपनी कृपासे क्षमा करदें मुझको अपना से
वक और शिशु अनुमान करें क्योंकि साधू और
सुहृद बालकों के बचनकी रचनाको सुनकर के
आनन्द ही होते हैं और इसपर नज़र रक्खें कि
हर एक इन्सान ख़ता और भूलका बना हुवा है
पस यह समझकर ऐब गीर न हों
और इस किताबका नाम (गुलदस्ता बांके लाल)
रक्खा है— कि जिसमें ख़्याल मरहठी व
[illegible] लिखी गई हैं ॥

श्रीगणेशायनमः॥श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः॥

॥ सखी ॥

गज बदन देव अपार भेव हमेश सेव सुरेश जी। निज चरण सेवक सुखद बरणत सुजश शारद शेषजी। सुर असुर मुनिजन करत जय धुनि हरत बिघन कलेशजी। अभिलाख बांके दासकी उर बास करहु गणेश जी॥

दौड़

भाल शशि गणपति लम्बोदर
येक कर अभय दूसरे बर
तीसरे त्रिशूल सोहै कर।
चौथे में डौरू है सुन्दर॥
लाज दंगल में राख लीजे।
यही बर मुझे आप दीजे।

॥ १ ॥

॥ सखी ॥

करुणा करहु करुणा करहु करुणा करहु करुणायतन। मम दुख हरहु मम दुख हरहु मम दुख हरहु निज जान जन। अघ शमन हर अघ शमन हर अघ शमन हर जन है शरन। जगलाज रख जगलाज रख जगलाज रख गिरिजा रमन।

॥ दौड़ ॥

॥ गंगसिर चन्द्र चारु भाला ॥
॥ इंदि वर नेत्रहैं बिशाला ॥
॥ गले में मुन्डों की माला ॥
॥ बिराजै कटि मृगपति छाला ॥
॥ दास वांके मांगे कर जोर ॥
॥ चरण पाथोज रहै रति मोर ॥
॥ २ ॥

॥ ख्याल १ ॥

॥ श्रीगणेशजी का ॥

श्रीगणेश इकदन्त गजानन अग्रपूज्य सबला यक हो। जो जन सुमिरे सदा आसकरि तिन्हे आप बरदायक हो॥ टेक ॥
लम्बोदर अतिकाय भक्तप्रिय दासनके अघ घायक हो। मूषक वाहन खलबन दाहन पर ब्रह्म गुण गायक हो। फनि उपवीत पार्वती नंदन सकल शंभु गण नायक हो। कपिल बरन गज करन शरणप्रद जननी जनक रिझायक हो। सुन्दर बदन सिंदुर भूषण मेवा मोदक खायक हो। जो जन सुमिरे सदा आसकरि तिन्हे आप बर दायक हो ॥ १ ॥

धूम्रकेतु हरब प्रभुप्रिय ना-
यक हो। बिकट रूप विधुभाल भालगत विद्या
सिन्धु बिनायक हो। सुर नर सिद्ध असुर गन्धर्व
नु अभिमत बर बर सायक हो। अद्भुत चरित सा
धु सुख दायक गूढ़ अगोचर सायक हो। दारिद
दहन देव करुणा निधि सब बिधि जन मन भाय
क हो॥ जो जन सुमिरे सदा आसकर तिन्हैं आप
बरदायक हो॥ २॥
शरणागत प्रतिपाल परम मन प्रगत विपति व्य
यक हो। पुस्तक पाणि सारदा संयुत महादेव के
पायक हो। सर्व काल कर माल बिराजत सुखप्रद
रिख स्वत्तायक हो। दीनदयाल दीन सुख दायक
नाम प्रभाव जनायक हो। बार बार बिनती मुनि ज
।की इसमुख छन्द रचायक हो। जो जनि सुमिरें
सदा आसकर तिन्हें आप बरदायक हो॥ ३॥
घुंडा दंड अग्रतें परसत निजसिर कोन अघायक
हो। अंकुश धरन हरन सिन तुमते को सुख देन
पचाय कहौ॥ अस प्रभु तजि जे रहैं दुखारी तिन
ो कवन उपाय कहौ। श्रीगुरुदेव सत्य नाराय
ज्ञान भेद दरसायक हो। परशु धरन शुभकर
घन हर बांके दास सहायक हो। जोजन

सुमिरे सदा आस करि तिन्हे आप वर दायक हो ॥४॥

॥ ख्याल २ ॥

॥ श्रीगणेशजी का ॥

प्रथम पूजिये चरण गजानन निगमागम सुर मुनि गाया। श्रीगणराया-अपने जनके ऊपर करने दाया ॥ टेक ॥

लम्बोदर शशिभाल चतुर भुज करैं रिद्धि सिद्धी सेवा। पावन भेवा-शेष सनकादि नारदादिक देवा। पान फूल वर धूप नारियल और चढ़े हैंगी मेवा। जो करै सेवा-तिनके मन माना फल दायक देवा। गौरी नन्दन अघ जग वंदन सिधि दायक जस जग छाया। श्रीगणराया-अपने जन के ऊपर करने दाया ॥ १ ॥

येक दन्त बुधिवन्त सेवते सन्त सुनऊ शिवके लाला। नयन बिशाला-गलेमें पड़ी है गज मोतिन माला ॥ बिघन निवारन सुर मुनि रंजन राजे है सिंदुर आला। दीन दयाला-कीजिए अपने जन का प्रतिपाला ॥ तुमको ध्यावै निजफल पावै शोक नसावैं गजमाया। श्रीगणराया-अपने जनके उपर करते दाया ॥ २ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेशदेव रिषि संतन गुण तुम्हरे

गाते । पार नपाते • अपनी अपनी बुद्धि सम सब । ध्याते ॥ जो कवि बन्दें चरण आपके जगमें सुन्द र जश पाते । अति हुलसाते • दुःख और बिघन उ सके नन क्षण जाते ॥ फिर ना कमी है उसके नाई जो तुम्हारा जन कहलाया । श्री गणराया • अपने जनके ऊपर करते दाया ॥ ३ ॥

मैं बांके हूं दास तुम्हारा मुझे बेगि अपना लीजे । अभय करीजे • बुद्धि दे निवास उरमें आ कीजे । बार बार चरनों सिर नाऊं लाज जगत में रख लीजे । करुणा कीजे • मेरा चित चाह प्रभू पूरी कीजे ॥ इस जग आके सो सुख पावे जिसने तुम्हरा जश गा या । श्री गणराया • अपने जनके ऊपर करते दा । या ॥ ४ ॥ २ ॥ ॥ ख्याल ३ ॥

॥ श्री सरस्वतीजी का ॥

जगमग छवि जड़ता हरनि करनि सुख साज मात सुनियें बानी । जो कहूं में दोनो हाथ सदा उर बसो भा रती महरानी ॥ टेक ॥

धर ध्यान सरसुती रूप प्रथम कमलासन जिन्हों हृदे आनी ॥ जप यज्ञ दान ब्रत नेम सभी हुए सि द्ध तिनोंके जगजानी । जो आदि शक्ति जगदंब गि रा वह जिस्के बिन जग दुख खानी ॥ सोइ वे जानि

जन जबै सिद्धि हो सबै काज मंगल दानी । जनमन
माना सुख लहै तभी जब ह्वै पितामह पटरानी ॥
जोरूं मैं दोनो हाथ सदा उर बसो भारती महरानी १

॥ चौक ॥ १ ॥

भुज चारु चारु जन चारु चारु दिसि थंभै किये डो
लें प्रानी ॥ दस दस बिचार श्रुति चार सार पुस्तक उ
दार सो है पानी ॥ इक हाथ बीन सोहै नबीन निसि
दिन प्रबीन जयधुनि गानी ॥ कर फटिक माल बर
दे बिसाल करदे निहाल हो कबिज्ञानी ॥ जीकी
आसा अब करो सफल बरनौ हरिके गुण निजबानी
॥ जोरूं मैं दोनो हाथ सदा उर बसो भारती महरानी ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

गलमुक्त हार जनु सुर सिंगार जिहि उर बिहार सो
सुरमानी ॥ सब सेन साज सिर ताजदिपै लग छत्र फ
रै कनकन पानी । भाषा सरस्वती हंसजान भारती
सारदा ब्रह्मानी ॥ गो गिरा बीन कर बाक सिद्धि दा ।
जपै नाम तेरे बानी ॥ सोलहै नाम चातुर कहाई
हो सभाजीन फिरक्या हानी ॥ जोरूं मैं दोनों हाथ स
दाउर बसो भारती महरानी ॥ ३ ॥
जो लगातार बानी बिभूति अभिलाख नाम नति ठा
नी । जन बाग बादिनी मंत्र जपैं दस लाख नेम करि

रुचि आनी ॥ प्रतिभा अपार कविता उदार रसरीति छन्द गुन पहिचानी ॥ सो होइ शीघ्र कवि सही जथा कवि सत्य नरायन नृपमानी ॥ जिनके चरनोंका ।
यह प्रताप बाँके की ऐसी यह बानी ॥ जोरूं में दौनो हाथ सदा उर बसो भारती महरानी ॥ ५ ॥

॥ ख्याल ॥ ६ ॥

॥ श्री गुरुदेवजी का ॥

श्रीगुरुदेव देव सर्वोपरि गुरु महिमा कहि कौन सकै ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु शंभु गुरु गुरुतैं पर ब्रह्म झलकैं ॥ अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष ये गुरु सेवा बिनु लहै नहीं ॥ जिसने जहां लहा जो श्रमसों गुरु से वा है मुख्य नहीं ॥ अष्ट सिद्धि नव निधि सब संपत्ति गुरु सेवातें मिले सही ॥ गुरु सेवक हो निर्भय बिचरें स्वर्गलोक पाताल मही ॥ वेद पुराण शास्त्र सब देखो गुरु महिमा कहि सभी थके ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु शंभु गुरु गुरुतें पर ब्रह्म झलकै ॥ १ ॥

निगुरा नर नरकोंमें रहकर भांति भांतिके दुःख सहे ॥ कुंभीपाक तप्त बालूमें गुरु अपमानी देह दहे ॥ यम गण मारें हाय पुकारें गुरु महिमा जानी न है ॥ नरतन पाय जिनो गुरु सेया सो स्वर्गोंमें सुखी रहे ॥ वे नर धन्य पुण्यके भाजन गुरु पद रेणु रगीं अ

लके ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विस्नु शंभु गुरु गुरुतें पर ब्र
ह्म झलके ॥ २ ॥

ऋषि मुनि सिद्ध सुरासुर मानुज गुरुपद प्रेम सभों
कीना ॥ गुरु प्रसाद सबही सुख पाया पाछे पर ब्र
ह्मलीना ॥ गुरु प्रताप ध्रू अचल बिराजे जो नकभी
होगा छीना ॥ नारद की चौरासी नासी कोठिन म
नुज तरे दीना ॥ गुरु पद प्रेम होइ नरको जो बड़त
जन्मके पुण्य पके ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु शंभु गुरु
गुरुतें पर ब्रह्म झलके ॥ ३ ॥

कहूं कहांलो गुरुकी महिमा इस मुखतें कहिते न
बने ॥ पर ब्रह्म अवतारी होकर गुरु पद सिर नाया
सबने ॥ सब साधन से हीन होइ पर गुरु सेवा सुर
पुर गवने ॥ गुरुप्रसाद जग बिचरे प्रानी गन मानी
गुरु प्रेम सने ॥ गुरु प्रताप बांके की कविता सुनि
सुनिकें सज्जन पुलिके ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु शंभु
गुरु गुरुते पर ब्रह्म झलके ॥ ४ ॥

॥ ख्याल ५ ॥

ब्रह्मा बिष्णु महेश रूप तव ऐसे भगवन् तुमी
तो हो ॥ वाह २ प्रभु जन सुखदायक दुष्ट निकंद
न तुमी तो हो ॥ टेक ॥

अवधपुरी अवतार लिया कौशिल्या नन्दन

तुमीतो हो। भक्त हेत प्रभु रहे बनोंमे मारा रावन तुमी
तो हो॥ सुर रिषि मुनि सबका भय खोया शोक न
शावन तुमीतो हो। दास बिभीषण राज बिठाया जन
मन रंजन तुमीतो हो॥ परब्रह्म जगदीश रमांपति
अधम उधारण तुमीतो हो। वाह २ प्रभु जन सुखदा
यक दुष्ट निकंदन तुमीतो हो॥१॥
दन्तबक्र शिशुपाल कंस खल असुर संघारन तुमी
तो हो॥ जरासिंधु और कालयमन भठ भुजबल
मर्दन तुमीतो हो॥ ग्वाल बाल ब्रज गो सुखदायक
काली नाथन तुमीतो हो। ब्रज युवती संग रास मचा
वन माखन मांगन तुमीतो हो॥ दामोदर है नाम तु
म्हारा जशुधा नन्दन तुमीतो हो॥ वाह २ प्रभु जन सु
खदायक दुष्ट निकन्दन तुमीतो हो॥२॥
राजा बलिसे जो छल कीना ऐसे बामन तुमीतो हो
॥ पहिले तीनि पैंड भू मांगी सरबस छीनन तुमीतो
हो॥ फिर निज रूप बिराट बढ़ाकर बांधा बलि जन
तुमीतो हो॥ दिया त्रिलोकीराज इन्द्र को कश्यपनंद
न तुमीतो हो॥ गो फिर इन्द्र होयगा बलि भी अब त
ल भेजन तुमीतो हो॥ वाह २ प्रभु जन सुखदायक दु
ष्ट निकन्दन तुमीतो हो॥३॥
मुफ़ बांकेके सद्गुरु पंडित सत्यनरायन तुमीतो हो।

सुरनर बैंन कहीं बहु पोथी कविकुल भूषण तुमी।
नो हो ॥ छाया जिनका सुजस जगतमें बिन्तु बनाव
न तुमीनो हो ॥ भव सागरसे पार करो प्रभु निजजन
पालन तुमीनो हो ॥ अधम अजामिल गणिका ग
गके सबदुख काटन तुमीनो हो ॥ वाह २ प्रभुजनसु
खदायक दुष्टनिकन्दन तुमीं नो हो ॥ ४ ॥

॥ ख्याल ५ ॥

जो रमां बिहारन त्रिभुवन कारण धनुशर धारन
कहलाया। जयजय जग भर्त्ता जनदुख हर्त्ता पाल
न कर्त्ता रघुराया ॥ ठेक ॥

सर काज सह्मारन त्रिभुवन कारन अधम उधार
न छमांपते ॥ गो द्विज संतापी रावन पापी हता सु
रांपी रमां पते ॥ नभचर गंधर्वा सकल सुपर्वा छि
तिचर सर्वा बिल्लापते ॥ जन जान बचाया करि
निज दाया राज बिठाया मिल्लापते ॥ खल राक्षस
भारी सैन संघारी मुनिभय टारी जश छाया ॥ जय
जय जग भर्त्ता जनदुख हर्त्ता पाल्लन कर्त्ता रघुरा
या ॥ १ ॥

सनकादि मुनीशा अज गौरीशा नर खगकीशा मू
ढ पढा ॥ सुर सुरभीपालक खलदल घालक रिपु
उर शालक बिरद बढा ॥ द्विज अधम मलीना नाम

अधीना निजपददीना गरुड़ चढ़ा ॥ जन देखि दुखारी खंभ मंझारी मनुज मृगारि रूप कढ़ा ॥ प्रहलाद उबारा खल संघारा सुजश उदारा जग छाया ॥ जय जगभर्त्ता जनदुखहर्त्ता पालन कर्त्ता रघुराया ॥

॥ चौक २ ॥

जबही पटरानी मजलिस आनी सारी तानी परितापी ॥ तब कुरुपति दारा नाथ पुकारा तुही सहारा कहि काँपी । सुन आतुर धावा चीर बढ़ावा दर्प नसावा जगव्यापी ॥ धरि बामन रूपा छलि बलि भूपा बिराट रूपा छिति नाँपी ॥ जय त्रिभुवन बन्दन जशुमतिनंदन कंस निकंदन जदुराया । जयजय जगभर्त्ता जनदुखहर्त्ता पालन करता रघुराया ॥ ३ ॥

गजकी सुनि बानी निजजन जानी सारंगपानी ग्राह हना ॥ पुनि निज पद दीना गृद्ध अधीना ना क्रिया सुना ॥ जयजय भृगुनागा द्विज नृपकुल भागा सुजश घना ॥ जय राज दुलारे मख रखवारे अगनित तारे वेद भना ॥ जब वेह अपनावे शोक नसावे वांके गावे तजि माया ॥ जयजय जगभरता जनदुखहरता पालन करता रघुराया ॥ ४ ॥

॥ शिवजीका ॥
ख्याल ६

जयजय त्रिपुरारी भव भय हारी हर कामारी गौरि पती ॥ कमलासन देवा पावन भवा नित कर सेवा रमापती ॥ ठेक ॥

नंदीश सवारी गंगाधारी भुजंगधारी बरदाया ॥ गलहै मुंडमाला नयन बिशाला शशि धर भालाक र दाया ॥ गिरिजा अरधंगा सेवन भंगा भूतन संगा कहलाया ॥ है आप अमानी बेद बखानी प्रदजन मानी मुनिगाया ॥ सुरभय हरलीना बिषपी लीना अमृत दीना देवपती ॥ कमलासन देवा पावन भे वा नितकर सेवा रमापती ॥ १ ॥

हे दीन दयाला उतपन पाला अंतकराला वेद कहैं ॥ हे अज अबिनाशी सब घट बासी आत्म बिला सी सदा रहैं ॥ जस गावें संना वेद अनंता लहैन अंता मौन गहैं ॥ सनकादि नारदा शेष शारदा नहीं पार दा भेद लहैं ॥ अबजनकी बेरी करज नदेरी डूबो सवेरी तुहीगनी ॥ कमलासन देवा पावन भेवा नि तकर सेवा रमापती ॥ २ ॥

हे उमां बिहारन त्रिभुवन कारन शोक बिदारन सुख कर्त्ता ॥ हे जन मन रंजन दुष्ट निकंदन बिपति बिभं जन जग भर्त्ता ॥ गिरि बर कैलासा रहैं उदासा उमा बिलासा बिषधर्त्ता ॥ नित निबसे काशी मलपन

नाशी अगजग राशी संहर्त्ता ॥ मैजड़ कह गावा पा
लखिनहिं
नदेवा पावन भेवा निनकर सेवा रमापती ॥३॥
हूं शौच बिहीना दाननदीना तपनहिं कीना सत।
संगा ॥ब्रत नेम नज्ञाना अधम अजाना कभीन न्हा
नाजागंगा ॥ तिहि महिमा पारा वार अपारा करुणा
गारा अर्द्धंगा । अब अपना लीजे अभय करीजे पद
रति दीजै तन चंगा ॥ जन बांके गावे जग सुख पावे
छिन छिन ध्यावे उमांपती ॥ कमलासन देवा पा
वन भेवा निनकर सेवा रमा पती ॥ ४ ॥

ख्याल ६ पूतनावध

कंसकी भेजी इक नारी- पूतना हरिने संहारी ॥
॥ ठेक ॥

आई वो बनके अजब नारी - याद क्यों किया छत्र
धारी । काम जो होय करुं भारी· दूसीदम आज्ञा अनु
सारी । शिताबीसे होउं कमजारी· पूतना हरिने संहा
री ॥ १ ॥
कामयक मेरा बड़ा हैगा - आके वो जांपे अड़ा हैगा
। कान्ह यक शत्रु कड़ा हैगा । जनमकर अभीपड़ा
हैगा । उसे हनि यही फ़िकर भारी ॥ पूतना हरिने
संहारी ॥ २ ॥

ये क्या है काम ज़रा सारा। धीर धर अब दुशमन मारा ॥ ये कहकर गोकुल पग धारा ॥ बनी वो सुन्दर सी दारा ॥ जिसे लखि मोहे नर नारी ॥ पूतना हरि ने संहारी ॥ ३ ॥

जहां वो गई नज़र फारे। गिरे सुन उसकी चिंघारे हज़ारों बालक उन मारे। गई वो नन्द महर द्वारे। कुचों पर लगा ज़हर भारी। पूतना हरिने संहारी ॥

॥ चौक ४ ॥

देख भई मोहित ब्रजबाला। मनो पढ़ बसी करन डाला ॥ मोद भर लिया गोद लाला ॥ रसीगुन उठा लिया काला। कुमति की गई बुद्धि मारी ॥ पूतना हरिने संहारी ॥ ५ ॥

कुचों को पकड़ के बनवारी ॥ लगाया मुंहसे बलिधारी ॥ ज़ोर की चुसकी जब मारी ॥ निकल जां गई तभी सारी। गिरी कर घोर शब्द भारी ॥ पूतना हरिने संहारी ॥ ६ ॥

पिचा जो उसके तल आया। कोस छे तलक पड़ी काया ॥ गिरी तब गई भूल माया ॥ भयानक सूरत पर छाया। पेटपर खेलें असुरारि। पूतना हरिने संहारी ॥ ७ ॥

नगर में हुवा शब्द भारी। सुनके सब धाये नर

नारी ॥ लखें सब पड़ी असुर नर नारी। जिसे देखे हो भय भारी। उसपे खेलें थे गिरधारी ॥ पूतना हरिने संहारी ॥ ८ ॥

। मुख कंठसे लगा।

। भु को मनाया

खाया ॥ बलैयां लेवें ब्रजनारी ॥ पूतना हरिने संहारी ॥ ९ ॥

गुरु दुरगा।

पावें ॥ अन्तमें हरि पदको जावें। यही गुन बांके सिरनावें ॥ सदा चरनोंपे बलि हारी ॥ पूतना हरिने संहारी ॥ १० ॥

॥ ख्याल ७ ॥

मनिहारिन

ब्रषभानु की दुलारी ॥ भेष

मनिहारी ॥ ठेक ॥

करें अति बिछुवे झनकारी ॥ झांझने रामझोल भारी ॥ कड़ा पाजेब मनो ढारी। कौंधनीके जन बलिहारी ॥

॥ दोहा ॥

कंकन पहुंची नौगरी जोशन बाज़ूबंद

ला मुदरिया आरसी चूड़ी जेब दुचन्द

झूगनू झुमके नथ भारी। भेष कियो श्यामा मनि

हारी ॥ १ ॥

पहन कर घाघर घूमनदार ॥ रके लचकाके जा
पर भार ॥ चूंदरी लाकी सब्ज़ किनार ॥ बीच कुच
चोली सुंदर धार ॥ ॥ दोहा ॥

मिस्सी सुरमा साजिके मुखमें चाबे पान ।
लई बग़लमें चूड़ियां मनिहारिन बन कान

चली जिमि कामिनी मनिवारी ॥ भेष कियो श्यामा
मनिहारी ॥ २ ॥

जभी बरसानेमें आई । चूड़ियां लोरी धुनि लगाई
। मधुर धुनि टेरें यदुराई । राधिका सखी सुन पठा
ई ॥ ॥ दोहा ॥

अय मनिहारिन तोयको राधा बोला आन ।
चलो हमारे साथ तुम सुन मनमें हरषान ॥

गये जहां राधा थी प्यारी ।
भेष कियो श्यामा मनिहारी ॥ ३ ॥

चूड़ियां जोड़े चुन लाई । जोन चंदाकी शरमाई ॥
हरी और सुरख़ सबज़ काई । राधिका पहिरो हरु
षाई ॥ ॥ दोहा ॥

बहुत भांतिकी चूड़ियां रखदीं आगे खोल
राधा बोली देखके पहिरावो कर मोल ॥

रूप लखि जान गई प्यारी । भेष कियो श्यामा ।

मनिहारी ॥४॥

अजी मन मोहन बनवारी। बनो कैसी हो मनिहारी ॥ मगन भई प्रेमाकुल भारी। येक टक लखि रही छबि प्यारी ॥ ॥ दोहा ॥

सो बांके भर अंक तब राधा लीलिपटाय
तन मन ग्रह और सखिन। की सब सुध दी बिसराय। कृष्म की लीला अति प्यारी। भेष किया श्यामा मनिहारी ॥५॥

ख्याल टासका

जमन के तट पर बनवारी। मुरलिया बजावें गिरधारी ॥ ॥ ठेक ॥

कूकसुन मुरली की बामा। चलीं सब तज ग्रह के कामा ॥ पुत्र अरु पती लाज ग्रामा। छोड़ दई मन मान्यो श्यामा ॥ ॥ दोहा ॥

घाघर ओढ़ो चूंदरी पहरी घाघर जान ॥
आभूषण अवरे वसब भूलीं सब हि अपा
जाति जिमि मदिरा पी भारी ॥ मुरलिया बजावें गिरधारी ॥ १ ॥

कृष्म लखि करके ब्रजनारी। कहैं मृदु बचन सुनहु प्यारी। यवड़ कानन निसि है भारी। किधौं तुम आई हो सारी ॥ ॥ दोहा ॥

ब्रजमें सिगरे कुशल है नंद महर कुशलात
सांची कहु ब्रजनागरी बड़े सोच की बात
कि पतिने दई तुम्हें गारी । मुरलिया बजावें गिर
धारी ॥ २ ॥

कृष्ण की सुनि शर सम बानी । गिरीं प्रथवी तल
अकुलानी ॥ मीन सर तट जिमि बिलखानी ॥
कही नव गोपी रिसबानी ॥ दोहा ॥
उठा धरनि कुच कर धरहि हिरदे लई लगाय
कहि कर बतियां प्रेमकी सब गोपी समझाय
करें तुम संग हम नृत प्यारी । मुरलिया बजावें गिर
धारी ॥ ३ ॥

बीचि बिचि श्यामाके काना । बनाये नटवर वर
बाना ॥ करें नृत गावहिं भगवाना । भक्तजन वत्स
लजगजाना ॥ ॥ दोहा ॥
भूम लोक पाताल अरु स्वर्गलोक हरिचंद
शिव बिरंचि सनकादि मुनी चकित भये सुरवृं
द ॥ रास बंसी धुनि सुनि भारी । मुरलिया बजावें
गिरधारी ॥ ४ ॥

रासलीला कर बनवारी ॥ दिया सुख सुखी भई
नारी ॥ मान उन मन आयो भारी । येक संग लई
नंजी सारी ॥ ॥ दोहा ॥

तेहरि अंतर ध्यान हुइ तेहि कर पकड़ मुरारि
फिरत दोऊ बनमें मुदित बोली प्रिया बिचारि
चुवैंहैं तिनुका पियभारी ॥ मुरलिया बजावें गिरधारी
॥ चौक ॥ ५ ॥
कहैं तब कान्हा मुसक्याई ॥ चढ़ो कन्धापै मम आ
ई ॥ गोपिका मनमें हरषाई ॥ छिपे हरि चढ़न नहीं
पाई ॥ ॥ दोहा ॥
बिलपत नन्द कुमार बिनु कहा करी करतार
मो मन आयो मानसो छिपगये कृष्ण मुरारि
करीमैं अनुचित बड़ भारी ॥ मुरलिया बजावें गिर
धारी ॥ ६ ॥ ॥ चौक ॥ ६ ॥
आय तजि जिनको बनवारी ॥ गोपियाँ फिरें बन म
झारी ॥ पूछती बृक्षोंसे सारी । तुमनें देखेहैं गिरधा
री ॥ ॥ दोहा ॥
पूँछति बृक्ष लताओंसे मिली गोपिसों आन
तेह पूंछति सब गोपियाँ कहाँ गयेरी कान्ह ॥
तुहीहै कृष्णकी पियारी ॥ मुरलिया बजावें गिरधा
री ॥ ॥ चौक ॥ ७ ॥
सखी मो मान जिया आया ॥ श्यामनें यातें बिसरा
या ॥ सबों पुनि कृषण सुजस गाया ॥ कियाजो हरि
कर दिखलाया ॥ ॥ दोहा ॥

इक बोली सुनिये सखा चितवहु मेरी ओर
प्रथमहि मारी पूतना सकट बकासुर घोर
नंद सुत सोभे बनवारी ॥ मुरलिया बजावें गिरधा
री ॥ ८ ॥ ॥ चौक ॥ ८ ॥
परस्पर लीला ब्रजनारी ॥ करेंहि बिरहाकुलमत
वारी ॥ प्रघट भय आकर बनवारी ॥ मगन भई
गोपी ब्रज सारी ॥ ॥ दोहा ॥
यह बांके लीला ललित पढ़ै सुनै मन लाय
सुन्दर कीरति जगत में नेह देवें यदुराय ॥
गोपियां हरिपै बलिहारी ॥ मुरलिया बजावें गिर
धारी ॥ ९ ॥

॥ ख्याल होलीका ॥

इतै मत जइयो री गोरी ॥ कृष्ण वहां खेलें हैं होरी
॥ ठेक ॥
मुझे तो पकड़ के बरजोरी । भरी मुहि आंखिन में रोरी
रंग में चूंदरि यह बोरी । सखी सिर गागरि भी फोरी ॥
॥ दोहा ॥
ठाडा मग में कान्ह सखी ग्वाल बाल लिये संग
भेरि पखावज ढोल ढप बाज रह्यो मिरदंग ॥
धूम सखि मच रही चहुं ओरी । कृष्ण वहां खेलें हैं
होरी ॥ १ ॥

जियाममधधकरह्यौप्यारी ॥ यादकरकौतुकबन
वारी ॥ पकड़बइयां प्रथवीडारी ॥ फाड़ अंगियांदई
दईमारी ॥　　　　॥ दोहा ॥

ऊपरसों सबग्वालिया मुखमेंडालत रंग ॥
अरु सजनी कुछ नहिं खबर कहाकियेमोसंग
सांचमैं कहूंहूं किशोरी। कृष्णवहांखेलेहैं होरी ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

अनोखा भयानन्दकालाल। पंथमें लूटेब्रजकीबा
ल ॥ निकालै नई नई यहचाल ॥ नकाहूकीहैया
कोशाल ॥　　　　॥ दोहा ॥

चलो सखीरी सकल मिल नन्द महरकेपास
करें आपनी अर्ज़ हम इन बहु दीनात्रास ॥
करै फिर यहना बरज़ोरी। कृष्णवहां खेलेंहैंहोरी ॥

॥ चौक ॥ ३ ॥

जशोधा बरजो श्यामाकों ॥ करैजो फ़ज़ियत वामां
कों ॥ लजाया इननन्दबामाको ॥ दोष लागेगुरु ना
मांको ॥　　　　॥ दोहा ॥

कपड़ोंपर रंगडालकर मुखसैमलैगुलाल
धरनडारकुचपकड़कर चूमतबदनगुपाल
कहीमें कितनी करजोरी। कृष्णवहांखेलैहोंहोरी

॥ चौक ॥ ४ ॥

जभी घर आये जदुराया। महरने हरिको धमकाया।
ढीठने हमैंभी लजाया। किया बदनाम नन्दराया।

॥ दोहा ॥

ऐसी होलीहै कहीं रोकी ब्रजकी राह॥
रंगसों कपड़े नल किये गह बरजोरी बांह
आई अब श्यामत है तोरी। कृष्ण वहां खेलेहैं होरी॥ ५॥
अरीये कूठी ब्रजगोरी। बनावें बातें बरा ज़ोरी॥
नखेला इनसे मैं होरी। लगावें मानाये खोरी॥

॥ दोहा॥

उलटा मुझे खिझावती सुनले बोलूं सांच
बब्बी लेले पकड़कर खूब नचावें नांच।
आजमा मै नहि नाचोरी। कृष्ण वहां खेलेहैं होरी

॥ चौक॥ ६॥

कृष्णकी सुनके चतुराई। महरने ग्वालिन समझाई। गुरु दुरगा सिंह बलिजाई। जसोधा हरि हिरदे लाई॥

॥ दोहा॥

कहै बांके ग्वालिन गई मनमें सब हरषात
श्यामल गात बिलोकि के लोचन नहिं अघात
कृष्ण मुख चंद्रकी चकोरी। कृष्ण वहां खेलेहैं होरी॥ ७॥

ख्याल बिरहनी
चौमासा

घटा घिरि आई घन घोरा । नहिं आया प्रीतम मोरा

॥ टेक ॥

महीना असाढ़ का आया । मोर दादुर ने गुल मचाया
ब्यार वह सननन पुरवाया । श्याम बिन जियरा घबराया ॥ ॥ छन्द ॥

काली धौरी धूम धूसरी घटा आन छाई ।
दामन दमके बादल गरजे जिया फटा जाई
जान पिया बिन कामदेव ने फ़ौज आ चढ़ाई
पी बेदर्दी ने अजहूं लग ख़बर ना पठाई ।

जाने क्या भाई उनके मन । हमारे निकले पी दु श्राम
सखी निज करमों की खोरा । नहिं आया प्रीतम मोरा

॥ चौक ॥ १ ॥

सखी अब शुरू हुवा सावन । कामनी लगी गीत गावन । लगे पी हमको तरसावन । जलो दुखदाई यह सावन ॥ ॥ छन्द ॥

सौतें सुखसे फूलें हमको तीजें दुखदाई ।
देखिये रेशम डोर हमें भई नागन सम नाई
बाग़ लगे बीरान गान नहिं भावे री माई ॥
आभूषण होगये भार सखी ये तीजें जल जाई

ननीजें पीके बिन आवें। रामना काह्को लावे ॥
कोकिला करो न तुम शोरा ॥ नहिं आया प्रीतम मेरा
॥ २ ॥ ॥ चौक ॥ २ ॥
सखी अब भादों आया री। घटा घिरि आई अति
कारी ॥ करूं मैं कैसी बनवारी ॥ दीजिये दरशन गि
रधारी ॥ ॥ छन्द ॥

कुबजा अबनौ कान्हा तुमको खूब नर रु भाई
दासीसे कर प्रीन ज़राभी लाज नहीं आई ॥
मारा मामूं कंस राजको कीरति जग छाई ॥
भूल गए चोरी माखन की पाई ठकुराई ॥

जनम का कपटी नंद लाला। प्रीतका जाल जिस
ने डाला। ख़बर लो आकर मनचोरा। नहीं आ
या प्रीतम मेरा ॥ ३ ॥ ॥ चौक ॥ ३ ॥
सखी अब असौज आया री ॥ कृष्णका दरशन पा
या री। पलंग फूलों सजवाया री। बिरहको दूर ग
माया री ॥ ॥ छन्द ॥

शहर रामपुर नवाब का है कलांगंज सरनाम
मछली दरवाज़े तट ना किया जहां हमारा धाम
अग्रवाल उस्ताद कहाने शहरों शहरों नाम।
सो बलदेवदास सुन बांके गाया छंद तमाम

गुरूके चरनों बलिहारी। जिनों की कृपा काम जारी।

कुस्मजो है रदास श्रोरा । नहीं आया प्रीतम मोरा ॥

॥ १० ख्याल बिरहनी ॥

॥ चौमासा ॥

करूं मै कैसी । अरी ऋतु बरसा की आई । स्याम के कुबिजा मन भाई ॥ ॥ ठेक ॥

असाढ़ो आया । हुआ निज दुशमन दुखदाई ॥ घटा कारी कारी छाई । डरै मन मोरा ॥ स्यामने साधी निठुराई ॥ हमै भई बरसा दुखदाई । मरै हम लाजों चाहिये समसों असनाई ॥ स्याम के कुबिजा मन भाई ॥ १ ॥

सामनो आया । कि जिसमें तीजें नियराई ॥ सखी सब भूलन कों आई । पियाने सजनी ॥ दिलासा दे दे वह काई ॥ रटैं हम चातक की नांई । खूब नर । साया ॥ मिली है उनको ठकुराई । स्याम के कुबिज मन भाई ॥ २ ॥

महीना भादों । अभीसे करीये लगाई । पिया की ख़बर भीन पाई । मोर लाबोलें । करें हम कैसी री माई । जानतो कुबिजाने खाई । दामिनी दमके । लखो तो पीकी निठुराई । स्याम के कुबिजा मन भाई ॥ ३ ॥

असौज नीका । स्याम की पाती तो आई । इसीको समझ लो कन्हाई । जुदा श्रो छाती । म्वानिके वृन्दों

से भाई । आसचातक ज्यों भर पाई । आस है आगे । मिलेंगे बाँके लाल आई । स्याम के कुबिजा मन भाई ॥ ४ ॥

१० ख्याल बिरहनी

बिकल जिया रहे मेरा दिनरात । ख़फ़ा भये पिया कौन सी बात ॥ ॥ ठेक ॥

जुदा जिसका शौहर होवे । उसको क्यौं करके सबर होवे । पिया तुम बिन न गुज़र होवे । व सब तुम हो कि ज़हर होवै ॥ ॥ दोहा ॥

हाय सखी कैसी करूं पिया दिया है त्रास ।

सौतें संग ले सोवती हम बिलषे बारः मास

मीन जल बिन जैसे बिलषात । ख़फ़ा भये पिया कौ न सी बात ॥ १ ॥

दिखादो आकर तुम दीदार । जुदाई ने कीना लाचार । है जीना तुम बिन अब ज़िन हार । गिरीबाँ किया है मैने नार ॥ ॥ दोहा ॥

आलीरी बिन पीव के जीना है धरकार

सौतें जादू गर बड़ी मोह लिये भरतार ॥

रहूं हूं मीज मीज के हात । ख़फ़ा भये पिया कौन सी बात ॥ २ ॥

हुये हो जब से तुम न्यारे । तिनके चिन चिन के दि

नगुज़ारे ॥ गिनूंहूं शबको मैं तारे । वस्ल आकरके देऊ प्यारे ॥ ॥ दोहा ॥

अय सजनी प्रीतम मेरे छाये हैं परदेश
जाऊं पीके देशमें करूं जोगना भेष ॥

नहीं कोई नसीबका है सात । ख़फ़ा भये पिया कौनसी बात ॥ ३ ॥

उतारूं सखी मैं अभरनको । मलूंहूं भभूत सब तन को । ढूंढूंजा अपने साजनको । नछोड़ूं कोई कोहबनको ॥ ॥ दोहा ॥

आलीरी अब मैं चली पीके अपने देश
रंगे गेरुवा बस्त्र हैं खोल लिये सिर केश ।

गलेमें सेली बीन ले हात ॥ ख़फ़ा भये पिया कौनसी बात ॥ ४ ॥

पिया अब है नहिं दिलको चैन । तुह्मारे दरशके प्यासे नैन । सुनूं अबदुल हकीमके बैन ॥ ख़ुशी हों बांके लाल दिन रैन ॥ ॥ दोहा ॥

अब गिरधारी पी मिले हुई मुरादें पूर ॥
रहें रामपुर शहर में गंज कलां मशहूर ॥

रुहेलोंका जो है बिख्यात । ख़फ़ा भय कौनसी बात ॥ ५ ॥

११ ख्याल नसीहतका

संसार है तिसका जो मग रास्ता सो रास्ता सारी याने सब रचना है याने बनाई हुई है उस ईश्वरकी अथवा सारी रचना परमेश्वर की जग मग है ॥

॥ मूल ॥

लख चौरासी थान फिरनको यहां दाउ से है बचना।

॥ अर्थ ॥

देखो ८४ घर हैं १७ चौका ६८ और ७ निकलने के और ६ घुसनेके यह ८४ घर हैं अथवा नरद के खड़ी होनेमें अपने घरके १६ बख़न पकनेके १७ घर और १७ नी ५१ नौ नो हत्थोंके सब मिलाके ८४ हुए। इस सारीके फिरनेको याने नरदोंके आने जानेको इस खेलमें दाउ और से है याने होनी है खिलारी लोग आपसमें दाउं औरसे बोलते हैं तिससे बचना यह नसीहत है।

मारफ़तमें) ८४ लाख थान याने जो नै है इनसे बड़े दाउं से अर्थात् बड़ी हुशियारी से बचना है ॥

॥ मूल ॥

चार चार बदरंग रंग के नरद रात दिनके जामे।

॥ अर्थ ॥

चार नर्द रंग चारनर्द बदरंग की जिसमें है चाहे रातको खेलो चाहो दिनकों ॥ मारफ़तमें ॥ रात और दिनके चार चार जाम जो पहर हैं सो रातके बदरंगके बुरे अंधेरेके हैं। और दिनके रंगके सुन्दर उजालेके वही गोया नरदें हैं क्योंकि खेलमें नरदोंसे काम रहता है दुनियां में दिन रात के पहरोंसे

काम रहनाहै ॥ ॥ मूल ॥

हरदम ख्याल रहै हरसे गर छूटेतो मारे जासै।

॥ अर्थ ॥

हरदम हर नरद से ख्याल रहै तो नरद बची रहै अगर ख्याल छूटा और नरद मारी गई ॥ मारफ़तमें । हरदम ख्याल हरसे ईश्वर से रहै तो ठीकहै अगर ख्याल जिसका छूटा सोई मारे जातेहैं ॥ ॥ मूल ॥

चार दिशा सारी सुखदायक जो जुगना फूटे तासैं ॥ अर्थ

चारों तरफ़ की सारीजो बिछीहै सो सुख देने वाली है मगर जो नरदों का जुग न फूटेतो ॥ मारफ़तमें ॥ चार दिशा पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये सारी सब सुख के देने वाली हैं मगर कब जो जुग ना फूटे तिन दिशाओं में यहां जुग फूटना क्या है कि यह जीवात्मा ईश्वरको सब जगह देखता रहै तो गोया ईश्वर के । संग हमेशः रहता है तो जुग नहीं फूटा ॥

॥ मूल ॥

एक हुए पर सुख निज घरमें जहौ लूटै खासैं।

॥ अर्थ ॥

अगर नरद एक होगई याने जुग फूटगया तो फिर सुख कहीं नहीं सिवा अपने घरके जबतक अपने घरके भीतर नहीं पहुंचती है नरद तब तक पिटती है बड़ी मुशकिलों से घरमें पहुंचती है

जब अपने घर में पहुंच गई फिर क्या खौफ़ है चैन से लूटो खाउ।

॥ मारफ़त में ॥

अगर जीवात्मा परमात्मा दोनों एक होगए याने जीवात्मा ने परमात्मा को जब जाना तो फिर दो नहीं रहे एक होजाते हैं जब एक हुए तो कहीं मन फिरे अपनेही घरमें याने हृदय में सुखहै चैन से लूटो खाउ सांडुसे मस्त रहो ॥

॥ मूल ॥

तमो रजो सत गुण के पासे फेर फेर जिनसे।
पचना ॥

॥ अर्थ ॥

पासेमें तीन रंगतें होतीहैं तमो गुण का रूप काला सो स्याही है रजो गुण का रूप लाल सो बिन्दीयों के गिरद लालीभी होती है सतगुण का रूप सफ़ेद सो सफ़ेद हाथीदांत होताही है। बेर बेर जिन पासोंसे पचना पड़ताहै- याने हर दफ़े पासेही हाथ में आतेहैं फेके जातेहैं यही पचनाहै ॥

मारफ़त में

तमोगुण रजोगुण सतोगुण- येजो तीनों गुणहैं जीवात्मा हमेशा इनमें से किसी न किसी गुणके पास रहेगा जब इनही के पास रहनातो इनके आधीन ठहरा इसी वास्ते बेर बेर इन्हीसे पचना पड़ताहै कभी तमोगुण आगया तो पाप किया नरक भोगा - कभी रजोगुण आयातो नामवरी का काम जारी कर दिया उसमें तकलीफ़ें उठाईं कभी सतगुण के प्रभाव से अच्छा काम बन पड़ा तो कुछ दिनों स्वर्गमें सुख कर लिया फिर क्या

पचना है ॥ ॥ मूल ॥ उडान ॥

लख चौरासी थान फिरनको यहां दाउसे है बचना ॥ १ ॥ ॥ मूल ॥

इक्का ईश दुआ यह प्रानी दुहूं बीच माया जाना

॥ अर्थ ॥

अब पासेका हाल कहते हैं कि पासेमें इक्का ईशहै - ईश माने बड़ेके हैं बाज़े वख़्त पौके बिना बाज़ी जाती रहती है - और पौ नहीं आती जैसे परमेश्वर सबमें व्यापक है ऐसे यह इक्का भी सभी अंकोंमें भराहै इसवास्ते ईशहै और दूसरी तरफ़ जो दूआहै जैसा यह प्रानी जैसा दुआ इक्के के और पंजेके बीचमेंहै तैसे यह प्रानी इक्का ईश्वर और पंजा पंचभूत जो पृथ्वी जल तेज वायु आकाश हैं उनके बीचमें हैं और दोनोंके बीचमें माया है मायाको क़नात बाँधाहै कबीश्वरों ने क़नात बीच में होनेसे कुछ दीख नहीं पड़ताहै सो इक्का दुआके बीचमें कोने ऐसे ऊंचेहैं मानो क़नात जो एक को एक नदेखे ॥

॥ मारफ़तमें ॥

ईश जो ईश्वर है सो इक्काहै अकेलाहै। जिसकी बराबर कोई कभी भी नहीं हुवा नहै नहोगा दूसरा। यह प्रानीहै ईश्वर का अंशही है ग़ैर नहीहै दोनोंके बीचमें मायाहै मायाके बीचमें होनेही जीवात्मा फिर ईश्वरके रूपको नहीं देख सकता

॥ मूल ॥

पंचभूत तन छक्के बस कर उसने भरमाया माना

॥ अर्थ ॥

पंच पंजा जिससे भूत याने पैदा हुआ है तन याने देह जिसका ऐसे छक्के बसकर याने याने हो चुके इसी पंजे छक्के ने भरमाया है ऐसा माना है ॥ ॥ मारफ़तमें ॥

पंचभूत पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इनीका है देह जिस्का ऐसा कोन जीवात्मा तिसे छक्के बस करके छे कौन कौन काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य याने ईर्षा इनके काबूमें करके उस मायाने भरमाया ऐसा माना है ॥

॥ मूल ॥

वह इसका यह उसका हितसे जुगल खिलारी इकवाना ॥ ॥ अर्थ ॥

दो खेलने वाले होतेहैं मुख्य कहीं चारभी होते हैं परंतु उनमें भी दो दो एक तरफ होतेहैं इसीवास्ते दोही कहे दोनों खिलारीयों में हितसे याने दोस्तीके तौर पर वह इस्का और यह उस्का है और दोनोंका एकही बाना है यहां बाना खेलका लिया है। कपड़े वग़ैरः का नहिं मानना ॥

मारफ़तमें - वह परमात्मा इस जीवात्माका यह जीवात्मा भी उस परमात्माका है हितसे प्रीतिसे दोनों खेलने वाले हैं संसार रूपी खेलके एकसाही दोनों का बाना याने भेषहै क्यों कि परमात्माका नाम मनुजावतार है मनुज

कहते हैं मनुष्य को तिसमेंहै बास जिसका इस सबब से एक हीवा नादोनोंका हुवा ॥ ॥ मूल ॥

दाउं चूकतेही हारेगा फिर फिर चौरासी थाना

॥ अर्थ ॥

दाउं चूकनेही हार जावेगा जब हार जानताहै तो फिर फिर बेर बेर वे चौरासी घरोंमें अपना थान मानताहै याने फिर फिर ख्याल ताहै ॥ **मारफतमें** ॥ अबकी भला दाउंहै क्यों कि जतन जोकुछ इस चौरासी से छूटनेका कुछ बनताहै तो इसी मनुष्य शरीर से ही बनताहै सो यह भला दाउं है कि । आज कल इस जीवात्मा का मनुष्य शरीर है यह बड़ा दाउं है। जो दाउ चूका और हारा तो क्या होगा फिर २ चौरासी में इस्का थाना होताहै याने चौरासी भोगना है । किसीका दोहा है ।

॥ दोहा ॥

लख चौरासी भुगतने बीत जांय जुग चार
पाछे नरतन पायगा तातें राम संम्हार ॥

॥ मूल ॥

छूटे छक्के पंजे दोनों इक दम सेन परे नचना।

॥ अर्थ ॥

जब हारताहै खिलारी तब छक्के पंजे दोनों छुट जातेहैं याने घबरा जाताहै - पासेमें छक्के पंजे दुआ इका ये सभी होतेहैं सो छुट जाते याने हारनेही पासा फेंक देताहै तो अपने आपही

छक्के पंजे छुट गए ॥ ॥ मारफ़तमें ॥
जब चौरासी भुगननी पड़ती है तो छक्के पंजे दोनों एक दमसे छुट जाते हैं याने घबरा जाता है चाहता है कि नपरै नाचना मुझे परंतु चौरासीमें पड़के तरह तरह के नाच नाचने ही पड़ते हैं

॥ मूल। उड़ान ॥

लख चौरासी थान फिरनको यही दाउंसे है बचना ॥ २ ॥

॥ मूल ॥

एक वेदकी दो गुरु कुलकी न तीनि काने गेर कधी ॥

॥ अर्थ ॥

कानि कहते हैं मर्यादको कानिकी जमा काने हुई ॥ एक मर्याद वेदकी कि ईश्वर सत्य विश्वंभर सबका मालिक है ऐसी वेदकी मर्याद है यह एक कानि १ दो काने गुरु कुलकी - याने एक गुरुकी दूसरी कुलकी कानि गुरुकी कानि क्योंकि गुरु देवोंके देव हैं परमेश्वर में और गुरु में कुछ अंतर नजानना २ तीसरी कुलकी कानि हमारे कुलमें अच्छे अच्छे काम होते आए हैं। जो ज़रूर करना - ये तीनि कानें हुईं ३ यहां तक कानेका अर्थ हुआ - अब खिलारी को चाहिये कि तीनि काने कधी नगेरे। क्यों। क्योंकि बहुतही छोटा पासा है ॥

॥ मारफ़तमें ॥
ऊपर कहीहुई जो तीनि काने हैं तिनें कधी न गेरे यहां याने ये तीनों कानें न छोड़े ॥ ॥ मूल ॥

स्वर्ग नरक परलोक लोककी नचार कानें फेंक सुधी ॥ ॥ अर्थ ॥

स्वर्गकी मर्याद यह है कि जो यज्ञ वगैरे सत्कर्म करनेसे स्वर्ग प्राप्ति होताहै- इसी प्रकार निंदित कर्म करने वालेको नरक भोगना होताहीहै - परलोक की कानि यह है कि ऐसा कर्म खोटे आचरण वेद विप्र साधूकी अवज्ञा वा निन्दा करने से परलोक बिगड़जाता है लोककी कानि यह है कि ऐसा काम कि जिससे किसीको तकलीफ़ पहुंचे जिसके करनेसे लोक में अपयश होताहै- ये चार कानें हुई ॥

अब खिलारी को चाहिये कि चार कानेका पासाभी जो सुधी याने सुन्दर बुद्धि वाला होवे सो न फेंके - क्योंकि यहभी बहुत छोटा पासाहै ॥ ॥ मारफ़तमें ॥

ऊपर की लिखी हुई जो चार कानेहैं तिन्हें जो सुधी होय अर्थात् सुन्दर बुद्धीवाला हो सो उन चार कानों को भी कधी न फेंके याने हमेंशा उनको याद रक्खे ॥

॥ मूल ॥

पंजरी फ़करी हुई फ़िकर से बुरे दाउं पर रहे नधी ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥

यहांसे आगेकी कड़ीयोंमें अक्सर जो पासे पड़ने हैं खेलमें वेई गिनाएहैं मगर मारफ़तमें पूरी इबारत का अर्थ समझना चाहियें। खेलमें पंजरीका भी पासा होताहै जब पंजरी का

दाउं रक्खा किसीने और पंजरी नपड़ी उस वख़्त कहते हैं कि बुरे दाउंके रखने वख़्त थी जो अक़्लहै सो जानी रहतीहै और जो कुछ रहती भी सो फ़िकर के मारे फिंकरी याने बहुत ख़राब वाली होती है ॥

॥ मारफ़तमें ॥

पंजरी जो देहहै सो फ़िकरके मारे फ़ंफरी याने नाताक़त होगई क्यौं कि जब दुनियाँ का खोटा साथ निवाहना पड़ताहै तो वह बड़ा बुरा दाउं होताहै। उस वख़्त अक़्ल जानीही रहतीहै तो फ़िकर करता है कि हाय इस जगह इन दुष्टोंके संगके सबब से मेरा परलोक मै न जानियें क्या बुरा हाल होगा ॥

॥ मूल ॥

छकड़ी जगह धर्म तन धन जन रहै आक़बत लाज सधी ॥

॥ अर्थ ॥

छकड़ी का पांसा होताहै और बहुत कम आताहै। इसको मारफ़त में मिलाके मालिने कहेहैं- यह जो छकड़ी जगह हैं कौन कौन- पहले धर्म· दूसरा देह- तीसरा धन- चौथा जन याने कुटम्ब- पांचवीं आक़बत- छठी लाज याने शरम- ये सब छः चीज़ें सधीर हैं- याने दुरुस्त रहैं ॥

॥ मूल ॥

बुरे पाँच दो जिनके कारन जगह जीतकी नप हुंचना ॥

॥ अर्थ ॥

पांच दो का पांसा अगर बाज़ी के शुरूमें पड़े तो खिलाड़ी लोग बहुत जानते हैं- कहावत है) हारी बाज़ी जानियें पड़े पांच दो सात।

इस पांसेके पड़नेसे जीतकी जगह पर पहुंचना बहुत मुशकिलहै

॥ मारफ़तमें ॥ ये सात बुरेहैं पांचतो काम क्रोध लोभ मोह मद और दो मत्सरता और पराई निन्दा इन सातोंके सबब से । दुनिया मेंजीतकी जगह जो बड़ापन याने नामवरीकी जगह बहुत मुशकिल है इसवास्ते इन सातोंसे बचना चाहिये ॥

॥ मूल ॥ उड़ान ॥

लख चौरासी थान फिरनकों यहांदांवसेहै बचना ॥ ३ ॥

॥ मूल ॥

पांच तीनमहैं छ चारमें पंजरीमें नौ घर पाए ॥

॥ अर्थ ॥

पांच घर तीन कानेमें हैं छै घर चार कानेमें हैं- और पंजरीमें नौ घर होतेहैं इस बातको खिलारी लोग जानतेहैं ॥

मारफ़तमें ॥ पांचजो हैं तत्व प्रथ्वी जल तेज वायु आकाश - सो तीन जो गुणहैं - रजोगुण तमोगुण सत्यगुण इन्हीमें तो हैं क्योंकि सृष्टिकी आदिमें पहले गुण पैदा होजातेहैं बादिको तत्वपैदा होते हैं और छे जो शास्त्रहैं मीमांशा न्याय वेदांत योग सांख्य वैशेषिक - सो चारोंजो वेदहैं - ऋगवेद यजुर्वेद साम वेद अथर्ववेद सोइन्हीमें हैं। और इन वेद और शास्त्रोंसे यह बात जानी जाती है कि इन आठोंके संजोग से शरीर बनताहै । भाषामें पंजरी संस्कृतमें पंजर शरीर को कहतेहैं। इस पंजरी में ९ घरहैं २ आंखें २ कान २ नासिकापुट १ मुख २ नीचेहैं १ लिंग और

एकगुदा - ये नो घर मिले ॥ ॥ मूल ॥

चलो पांच दो समझ सोच कर तोभी सबनिधि। घर आए ॥ ॥ अर्थ ॥

पांच दो के पांसे को समझ सोच के चलो तोभी सबनिधी कहते हैं नो को नो घर आते हैं ॥ ॥ मारफतमें ॥

पंच काम क्रोध लोभ मोह मद और दो मात्सर्य्य और परनिंदा इन सातों बातों को समझ सोच कर संसार में चलो तोभी सब निधि याने महापद्म॰ पद्म॰ शं॰ मकर॰ कच्छप॰ मुकुंद॰ कुंद॰ नील॰ खर्व॰ ये नोह निधें अपने घर आवें ॥

॥ मूल ॥

छकड़ी जगह छ दो भी तैसे जो नर चातुर चल साए। तोभी सब आसा घर बैठ मुदित होइ जग जस छाए ॥ ॥ अर्थ ॥

यहां दो कड़ीयों का मिलके अर्थ होना है कि छकड़ी की छ दो भी तैसे ही हैं मगर जो नर इन्सान चातुर सा ऐसे चले याने सी तलना से चले तोभी याने छकड़ी में और छ दो मेंभी आसा कहते हैं दिसा को दिसा दश हैं तो भी दश घर बैठे आप खुशी हो जगत जस होय कि फलाना खूब खेलता है ॥

॥ मारफ़तमें ॥

जैसी छकड़ी जगह जो पहिले गिनाय चुके हैं तैसे छ दो भी हैं छ तो काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य और दो याने निंदा

और स्तुति इन आठों को सारः याने सीनल तासे चलेतौ सब आसा अर्थात् सब मनोरथ घर बैठे होंय और आप खुशीरहै जगतमें जसछावे ॥

॥ मूल ॥

खेलसही बेफिकर होयजो पेट भरनको मटर चना ॥

॥ मूल । उडान ॥

लख चौरासी थान फिरनको यहां दाउंसे है बचना।

॥ ४ ॥

॥ अर्थ ॥

अगर दुनियांमें बेफिकिर होय और पेट भरनेके वास्ते मिस्सी रोटीभी होयतो खेल क्या परवाह है नहींतो ये खेल खराब करदेता है ॥ मारफ़तमें ॥ यह खेल ज्ञानका ज़रूर खेलना चाहिये अगर पेट भरनेके वास्ते मटर चनाकी रोटीभी होयतो - नहींतो फिर फ़िकिरमें ये बातें काहेको सूझेंगी इसखेलमें बेफ़िकरी ज़रूर चाहिये ॥४॥ यहां चार चौक पूरे हुए ॥

॥ मूल ॥

ग्यारह दो तेरह चुके सब पांच तीनि छै तीनि सभी।

॥ अर्थ ॥

ये पासे ग्यारे दो का और पांच तीनि का और छ तीनि का सो सभी चूक गए ॥

॥ मारफ़तमें ॥

ग्यारह इन्द्रियां हाथ पाऊं लिंग गुदा बाणी ये कर्मेंद्रियां आंख नाक कान जीभ त्वचा ये ज्ञानेंद्री ग्यारवां मन और दो अवस्था बालापन - जवानी - और पांच तत्वका जो शरीर सो और तीन अवस्था।

जाग्रत स्वप्न सुखुप्ति छै काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य ।
और तीनि गुन रजोगन तमोगुन सत्वगुन ये सब तेरह होचुके
यानि बुढ़ापा आया बुढ़ापे में इंद्रियां भी बेक़ाबू होजाती हैं ।
सिरफ़ मरण अवस्था बाक़ी रहजाती है ॥

॥ मूल ॥

ये कच्चे बारहों बराबर समझाए समझे न कभी ।

॥ अर्थ ॥

ये पासा कच्चेका बराबर बारह घरही मिलते हैं चाहो एक नरद से चलो चाहोदो नरदसे कितना समझाया तुमको तुम कभी न समझे ॥ **मारफ़तमें** ॥ ये कच्चे नादान बारह महीने बराबर तुम्हें समझाया तुम कभी न समझे ॥

॥ मूल ॥

दस पौसे इक्कीस समझ लो एक बीचमें होन तभी

॥ अर्थ ॥

दस पौके पासेमें इक्कीस घर मिलते हैं सो समझ लो मगर बीचमें एक न होतो ॥

॥ मारफ़तमें ॥

दस पौ ग्यारह हुए दस इन्द्री ग्यारवां मन इन सबकी सफ़ाई से दुनियांकी बाज़ी इक्कीस होतीहै याने तरक़्क़ी होतीहै मगर कबजो बीचमें रोक याने सफ़ाई में कसर न होवे ॥

॥ मूल ॥

दस दो बारह वायस्त चौदह पंद्रह से पच्चीस अभी ।

(अर्थ)

दस दोका पासा बाइस घर चाहता है तुम अपनी खुशीसे चाहो बारह लेके बैठ रहो इसीतरह पंद्रह के पासेसे पच्चीस घर होते हैं अभी देखलो ॥

॥ मारफ़तमें ॥

रह महीने याने

ीना याने हमेशा जो चाहे तो चारु

नेके सबब से पंद्रह जो तत्व हैं कौन कौन पंचतन्मात्रा शब्द स्पर्श रूप रस गंध और पंच भूत पृथ्वी जल तेज वायु आकाश और पंच प्राण कौन कौन प्राण अपान समान उदान व्यान इन पंद्रह से अभी याने बेख़ौफ़ पच्चीस तत्व जाने जाते हैं कौन कौन पंच प्राण नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय और पंच ज्ञानेन्द्री और पंच कर्मेन्द्रि जो ऊपर लिख आये हैं। और दस इन्द्रियोंके देवता याने हाथोंके इन्द्र पाऊंके यज्ञ गुदाकेमित्र लिंगके प्रजापति त्वचाके पवन नेत्रोंका सूर्य्य नासिकाके अश्विनीकुमार रसनाके वरुण कानोंके दिशा बाणीके अग्नि ये पच्चीस जाने जाते हैं।

॥ मूल ॥

चलो सो रहो अब ना ॥

॥ अर्थ ॥

चौदह के और सोलहके पासेमेंभी छब्बीस घर लेलो अब चलो सोरहो नचोमन ॥

॥ अर्थ ॥

चौदह विद्यासे सोलह तत्वसे मन और कहे हुए पच्चीस तत्वये छब्बीस जानलो अब चलो सोरहो क्यों नचते हो ॥

॥ मूल ॥ उडान ॥

लख चौरासी थान फिरनको यहां दाउंसे है बचन।

॥ ५ ॥ ॥ मूल ॥

देख अठारह चलौ मेलसे तौ ले तीसों घरकूं रे ॥

॥ अर्थ ॥

अठारह के पासेको देखो अगर मेलसे चलो तो तीस घर मिलते हैं

॥ मारफ़तमें ॥

अठारह पुरानों को देखो और मेलके साथ चलो तीसो दिन याने किसीसे बिरोध मनकरो तो अपने घरको लेउ ॥

॥ मूल ॥

अगर अठारह बीच न बिचला तौले दूने भरपूरे

॥ अर्थ ॥

अगर अठारह के पासेमें बीचमें बीचवाला कोई नहीं है तो पूरे दूने घर लेले याने छत्तीस घर लेले तीनों नर्दसे ॥ मारफ़तमें

अगर अठारह पुरानो के बीमें न बिचला गया तो तेरे घर बैठे दूने हैं याने सब तरह से फ़ायदा है ॥ ॥ मूल ॥

तीनों काने समझके छकड़ी जगह जु पंद्रह मिलतू रे ॥ ॥ अर्थ ॥

तीनों कानेके पांच घर और छकड़ी के दस घर मिलके पंद्रह घर ॥ ॥ मारफतमें ॥

तीनों काने जो ऊपर लिख चुकेहैं और छे कड़ी जगह वहभी ऊपर

लिख चुके हैं इनको जो समझे तो तू पंद्रह जो तिथि हैं तो उनका मेल कर याने हर परद बारे में उन ऊपरकी बातों को विचारता रहो

॥ मूल ॥

कहदे सत्रह ।इसमें तो उन तीसों को घूरे ॥

॥ अर्थ ॥

इस सत्रहके पासे को कहदे कौन से पासेमें कौन कौन अंक हैं। अगर तू जान सकेगा तो तू उन तीस घरोंको घूरेगा याने देखेगा।

॥ मारफतमें ॥

इस शरीर में कहदे सत्रह तत्व कौन कौन से हैं वह जो ऊपर कह आये हैं तीस दिन तिनमें घूरेगा याने देखेगा तो तू जान सकेगा

॥ मूल ॥

बहुत दिनोंका हारा है टुक रुक रुक चल फिर भी लचना ॥ ॥ अर्थ ॥

बहुत दिनोंसे हारते चले आये हो थोड़ी देर रुक रुक के चलो आखरको लचना है याने फिर भी हारोगे ॥

॥ मारफ़तमें ॥

अनादि कालसे आवा गवन के सबब से हारा हुवा है टुक याने थोड़ी देर रुक रुक के चल याने समझ समझ के चाल चलो हर किसीसे कहे मत चलो आखर को लचना है याने नम्रतासे सब काम निकलेगा ॥ ॥ मूल । उड़ान ॥

लख चौरासी थान फिरन को यहां दाउं से है बचना

॥ ६ ॥ ॥ मूल ॥

पंजरी बिच ग्यारहकोदेखो गर्व न करना खपोवारे ।

॥ अर्थ ॥

पंजरीके पासेको ग्यारह के पासेके बीचमें जानों तुम्हारे चाहने ऊ
पजो पौ बारे थे वो आगये तो इनको देखकर यह गुमान मत करो
कि हमजो पासा चाहने हैं सोइ आजाना है ॥

॥ मारफतमें ॥

पंजरीजो शरीरहै इसके बीचमें ग्यारह जो इन्द्रियांहैं उनको देखो
और दुनियांमें कहावत है जिसके अनुकूल ईश्वर होनाहै उस
को लोग कहते हैं कि आज कलकी क्या है आज कल तो उसके
पौ बारह हैं इन पौ बारों को देख करके यह गुमान मत करोकि
चाहनाहं सोई होजाना है यह केवल ईश्वरकी कृपाहै ॥

॥ मूल ॥

इकऊपर दूने घर बैठे सीख न सीखी सौबारे ।

॥ अर्थ ॥

यह ऊपर लिखेहुए पंजरी और ग्यारह के पासेहैं इनमें एक ऊपर
है जिनके ऐसे दूने घर बैठते हैं जैसे पंजरीमें नौ घर हुए चार
दूनी आठ और एक नौ ऐसेई दस पौ में जानों तुमको सौदफ़े सि
खाया तुम सीखने नहीं । ॥ मारफतमें ॥

अगर ऊपरकी लिखी हुई नसीहतों में एकभी तुम ख्याल करते
तो तुम्हारे घर बैठे दूने थे सौतुमको सौदफ़े सिखाया तुमने भी

खुन सीखी ॥

॥ मूल ॥

पांच चार लखकर छ चारभी तेरहें चौदह बारे ॥

॥ अर्थ ॥

पांच चार का पासा तुमने देखकर छ चारका पासाभी देखा और तेरह चौदह वाला पासाभी देखा याने जाना तुमने ॥

॥ मारफ़तमें ॥

पांच तत्वके शरीरमें चार जो अवस्थाहैं याने जाग्रत स्वप्न सखुप्ति तुरीया इनको देखकर छः शास्त्र और चारों वेदभी तुमने देखे अब चौदह लोकके जोहैं बारे याने दरवाज़े वो सब तेरे हैं ॥

॥ मूल ॥

सब पासे इत उतसे देखो अबभी तजदे परिवार ।

॥ अर्थ ॥

सब पासोंको इधर उधरसे देखो अबभी परिवारको छोड़ दो ॥

॥ मारफ़तमें ॥

सब पासे याने सबके पास इधर से और उधरसे याने इधरसे अपनको उधरसे परमेश्वरको अबभी देखो और परिवारको तुम अपना समझते हो और तमाम दुनिया को ग़ैर इस बातको तज दो ॥

॥ मूल ॥

दाउं कहा तुम पर जीते हम बरसे बाज़ी क्यों सचना

॥ अर्थ ॥

दाउं कहा तुमने मगर जीते हम अब सच कहो बरसेकी बाज़ी हमा

री क्यों नहीं हुई ॥ ॥ मारफतमें ॥
है प्यारे हमने तुमपर याने तुमसे दाउं कहा याने तुमें दांव बनाया
इस वास्ते हमतो जीते याने हमतो उपदेश करचुके आगे वरसे
वा याने बडोंकी सेवाजीसे देखो क्या सचहै या नहीं ॥

॥ मूल । उड़ान ॥

लख चौरासी थान फिरनको यहाँ दाउंसे है बचना
॥ ७ ॥ ॥ मूल ॥

सुनिये श्रीगुरु सत्यनरायन हमतो आपके हैं चे
ले । हम यह चौसर खेला चाहें आप खिलाया तो
खेले ॥ हर फ़नमें जो चातुर होवे सो सुनि समझे हर
बेले । जो आनंद हमें अब आया वही मजा वह भी
लेले । बांके जी बिच अति खुश होजो जानि बूझ
नि सचना ।
दाउंसे है बचना ॥ ८ ॥

यह टीका खुलासा है इस वास्ते इसका टीका नहिं लिखा ग
या ॥

॥ श्रीः ॥

॥ सखी ॥

जबसे जमा है दिलमें मेरे, मौला तेरा ख़याल है।
तबसे मुझे हरदम तेरा दरकार तुझसे विसाल है
। लिख सके तेरी सनाको, किसकी इतनी मजाल है।
सबकी ज़बां आज़िज़ इहां पर, कहै बांके लाल है ॥

॥ दौड़ ॥

करीम है कार साज़ है तू। समी है बंदा नमाज़ है तू।
ग़नी है और बेनियाज़ है तू। है सोज़ गह गाहे साज़ है
तू। हरेक जा गुफ़्गू है तेरी। हरेक को जुस्तजू है तेरी १

॥ सखी ॥

नहीं है जबसे पहलूमें वो, तब से अश्का का री हैं
अज़ीज़ों आप हम अपने, ऐसे जीने से आरी हैं।
हज़ारों सोज़े फ़ुरक़त से, फफोले दिलपे कारी हैं।
कहूं अहवाल क्या बांके के, लबमें आह जारी हैं।

॥ दौड़ ॥

तेरी फ़ुरक़त में अय दिलदार गिरेबां किया है मैं
ने तार। ख़ुदारा दिखा जल्द दीदार। समझ ना प
ड़ा तेरा बीमार। लबोंपे आया मेरा दम है। मुझसे
मिलने की क्या क़सम है ॥ २ ॥

॥ सखी ॥

तेरी शबे फ़ुरक़त में गुज़रा, मुझपे जो कुछ हाल है ।
कोई अगर चाहूं रक़म करना, तो अमर मुहाल है ।
जल्द आकर ले ख़बर अब, ये कहां की टाल है ।
हर घड़ी तुझसे यही कहता, ये बांके लाल है ॥

॥ दौड़ ॥

दिले आशक़ को मत रुलातू
न हरदम ग़मसे अब घुलातू ।
किसी दिन उसको बस बुलातू
बुलाकर पासमें सुलातू ॥
हुस्न ये सदा न रहने का ॥
ख़्याल कर हमारे कहने का

॥ ख़्याल ॥ ६७।३।

जितने हैं सब हैं नाम उसी के ख़ालिक़ो रहमानो दावर
राम रहीम भी [illegible] अल्ला वो है सबसे बरतर

॥ टेक ॥

लासके हानेमें हम्दो सना उसकी अपने क्यों करके ब
यार । नाबे हैं जिसके ग़ौसो कुतब अबदालो वली
और पेग़म्बर । दश्त जिबालो अर्दो समां और माही
से लेकर ताबो क़मर ॥ जितने हैं सब हैं, रूवम के तावे
। इसमें क्या बरतर ॥

॥ और ॥

जलवा हर शै में है ज़ाहिर उसका
नामहै अव्वलो आख़िर उसका
जानते हैं नहीं माहिर उसका।
कामहै नइश्श वो नाहिर उसका
सिफ़्त सनाहो याहो बड़ाई सबहैं उसीकोकर बावर
रामरहीम भी कहते हैं उसको ब्रह्म वोहै सबसे बरतर
॥ चौक ॥ १ ॥
भटकेन कभी गर लाख होज़ुल्मत जिसका के वो होवे
यावर ॥ वोन मदन पर होवे तो हरगिज़ पायेन राह
फिरे दर दर ॥ ठोकरें राह में खाय हमेशा चैनन होउ
सको दमभर । पास खड़ा होने दे न कोई आँहो उसे।
अपनी दूवर ॥ ॥ शेर ॥
कब बयाँ होसके क़ुदरत उसकी।
ज़ाहर हर यक में है सनअत उसकी
है अजब तरह की हिकमत उसकी
भरती हर शैहै शहादत उसकी।
देखो जिधरको आंख उठाकर वोही उधर आताहै न
ज़र । राम रहीमभी कहते हैं उसको ब्रह्म वोहै सबसे
बरतर ॥ २ ॥ ॥ चौक ॥ २ ॥
जिसपर लुत्फ़ इनायत की वो डाले अपनी येक नज़
र। चरणोंपे बिठावें लोग उसे तसलीम करें आकर

कर । जबवो कहीं जाय उठकरके तो यह कहें बंदा पर वर ॥ आओ चले जाना बैठो आराम ज़रा करलो दम भर ॥ ॥ शेर ॥

कौनसी जा नहीं जलवा उसका ।
दैरो काबे में है चरचा उसका ।
मह से ता माही है शोहरा उसका
ज़िक्र किसजा नहीं होता उसका

कुल जगह है मौजूद वो हरदम खाली नहीं उस्से कोई दर ॥ राम रहीम भी कहते हैं उसको ब्रह्म वो है सब से बरतर ॥ ३॥ ॥ चौक ॥ ३॥

यही दुआ है उस्से बांके मेरी हरदम आठ पहर ॥ शर्म हया रखलीजिये मौला मुझको फिराना मतदर दर ॥ काम बनाने मेरे सारे रखना करम अपना मुझ पर । फ़ैल क़वी को देखन मेरे अपने करम पर । रखि ये नज़र॥ ॥ शेर ॥

नाम है कुल की ज़बां पर उसका
कोई ग़ाफ़िल नहीं उस्से असला
याद रः खो के जो उसको भूला ।
वो गया दोनों जगह से मारा ॥

करुणा कर जगदीश सदा अपनी तू बस मेरे ऊपर । राम रहीम भी कहते हैं उसको ब्रह्म वो है सबसे बरतर ॥

॥ ४ ॥　　　　॥ ख्याल ॥

जो साथ अग़यार के रहोगे और हर कहीं आओ जा ओगे तुम। तो याद रः खोये ख़ूब दिलमें के एक दिन धोखा पाओगे तुम ॥　टेक ॥

रुखे मुनव्वर को अपने हमसे कहो कहां तक छिपाओगे तुम। भलाये देखें तो हम भी साहिब न कब तलक पास आओगे तुम। है नाम जब तो हमारा हमको जो ख़ुद न आकर बुलाओगे तुम। न आयें गे हम तो हाथ जोड़ोगे पाउं पर सर झुकाओगे तुम। उठाके ग़ैरों को अपनी मजलिस से और हमको बिठाओगे तुम ॥ तो याद रः खोये ख़ूब दिलमें के एक दिन धोखा पाओगे तुम ॥ १ ॥　॥ चौक ॥ १ ॥

करोगे वादा भी कोई पूरा या झूठी क़सम हीं खाओगे तुम ॥ लगा ओगे सीने से कभी बी या फ़क़्त बातें बनाओगे तुम ॥ करो किसी दिन तो वादा ईफ़ाये फ़िक्र कब तक सुनाओगे तुम। योंही करोगे ये टाले बाले हमेशा बातें बनाओगे तुम। या कोई वादा भी पूरा होगा कभी भी बरमें सुलाओगे तुम। तो याद रः खोये ख़ूब दिलमें के एक दिन धोखा पाओगे तुम ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

सहेंगे आशक़ सितम तुम्हारे जहां तलक बस सताओ

गे तुम। न रोयेंगे वो भला कहाँ तक जो रुलाओगे तुम। जो ख़ुद ही जलते हों सामे ग़मसे उने नगरचे जलाओगे तुम। तो क्या बुरा होगा इसमें क हिये तुम्हारा दिलवर बताओगे तुम। जवाब क्या दोगे हक़ जो पूछेगा सामने जबके जाओगे तुम। तो याद रक्खो ये ख़ूब दिलमें के एक धोखा खाओगे तुम॥

॥ चौक। ३॥

कहे गुरु दुर्गादास दंगल में ख्याल जाकर जो गाओगे तुम। दिवाने घासीराम कहे जब सभामें चंगको ब जाओगे तुम॥ श्रीराम और मिरज़ा कहे दुशमनों को कैसा जलाओगे तुम॥ ख़याल जो बाँके लाल बक़ाल ऐसे ऐसे बनाओगे तुम॥ तो जानता हूं कि बीच दुनियां जरूर इज़्ज़त को पाओगे तुम॥

॥ ४॥ ॥ ख्याल॥

यहाँ तलक तो वो रोया तुझ बिन न उसकी आँखोंमें नम रहा है॥ ख़बर ले आशक़ की जल्द अपने के उसमें न दम रहा है॥ (टेक)

अगर मुआफ़िक़ कभी क़ज़ारा जो हमसे तू एक दम रहा है॥ तो बेवजः बरसों तेरा कज़दुम को मिस्ल कज ऐस नम रहा है॥ बताना तू हमको कौनसे रोज़ हमपे तेरा करम रहा है॥ हमेशा यह सो की

बदले आशिक़ पे जोर गाहे सितम रहाहै ॥ ग़ज़ल
यह कहनाहै यार तेरा कि तुझपे लुत्फ़ो करम रहाहै
। ख़बर ले आशक़ की जल्द अपने के उसमें बाक़ी न
दम रहाहै ॥१॥ ॥ चौक ॥१॥
तेरे मरीज़े ग़मे महोब्बत का चश्ममें आके दम रहाहै
न देर आनेमें कर मसीहा कि वक़्फ़ा अब बहुत
कम रहाहै ॥ बताऊं क्या तुझको किस क़दर दूर उ
स्से मुल्के अदम रहाहै ॥ नही है कुछ फ़ासला बहु
तसा बस एक यादो क़दम रहाहै ॥ चला गया होता
वोह कभीका तुम्हारे आनेपे थम रहाहै ॥ ख़बर ले
आशक़ की जल्द अपने के उसमें बाक़ी न दम रहाहै
॥ चौक ॥२॥
बयान क्या हो तुम्हारी फुरक़तमें दिलपे जो कुछ कि
ग़म रहाहै । जिगरमें सो ज़िश तो लबपे नाला हमेशा
आंखोंमें नम रहाहै ॥ न दिलमें ताबो तवां है बाक़ी
न जिस्ममें अपने दम रहाहै । जो वस्लसे ख़ुश हुवा
हूं यक शब तो बरसों रंजो अलम रहाहै ॥ मगर न
सब्बुर तेरा न दिलसे गया हमारे यह जम रहाहै ॥
ख़बर ले आशक़ की जल्द अपने के उसमें बाक़ी न
दम रहाहै ॥ ३ ॥ ॥ चौक ।२॥
ग़रूर इतना न हुस्नपे कर अबसत आशक़ से रम

रहाहै ॥ कल्लाम बांके का सुनये नादां कि कोई य
हां पर नजम रहाहै ॥ न फ़ौज़ बांकी किसी की हैगी
[illegible] हशाम रहाहै ॥ [illegible]
हैनय फ़क़ीरी सदांन नबल्लो अलम रहाहै । वो काम
करलेजो नाम नेकोंसे आज दुनिआ में थमरहाहै ।
ख़बर ले आशिक़ की जल्द अपने के उसमें बाक़ी ।
न दम रहाहै ॥ ४ ॥

॥ ख़्याल ॥

जबसे हुआ शैदा तेरा । पाया नहीं आराम असला

॥ ठेक ॥

हालहै यह मेरा तुझ बिन । कटती है शब तारे गिन
गिन ॥ येकहै नज़रोंमें रातो दिन । हिज्रमें तेरे बुते क
म सिन । जबसे दिया तुझे दिल अपना । पाया नहीं
आराम असला ॥ १ ॥
तेरी जुदाई ने अयजां । कुछ नहीं छोड़ा ताबो तवां
करदिया इहां नकतो हलकां । येक क़दम चलना
गरां । है तुझे जिसदिनसे देखा । पाया नहीं आरा
म असला ॥ २ ॥
ध्यान तेरा दिलसे यकदम । होता नहीं है मेरे कम ।
क्या कहूं मैं अपना आलम । हिज्रमें तेरे अय अज़ल
म । कर दिया लहू पानी मेरा । पाया नहीं आराम अ

सल्ला ॥ ३ ॥ ॥ चौक ॥ ३ ॥

अर्ज़है यह तुझसे दिलदार ॥ अबतो दिखा अ
दिलको
मेरे आय क़रार । वस्ल मिला मुझको न नेरा । पाया
नहीं आराम असल्ला ॥ ४ ॥ ॥ चौक । ५ ॥

क्या कहूँमै अय बाँके लाल ॥ उस्सै हुआ इक
ाल ॥ करदिया हिज्रने यह बेहाल ।
साँसभी
दिनसे दिया । पाया नहीं आराम असल्ला ॥ ५ ॥

॥ ख्याल ॥

ख़फ़ाजो रहतेहो हमसे इतने बताओ तो तुम सब
होगैरतो
पै ग़ुस्सा ग़ज़ब ये क्याहै ॥ ठेक ॥

कभीतो इन्साफ़ अपने दिलमें भिनू किसीरोज़ कर
पियारे । किग़ैरतो साथ रहमें हरदम हरयेक लह
ज़ा ग़रज़ तुमारे ॥ बिठालो मजलिसमें पास अपने
॥ औरजोकि
जानों दिलसे फिरें वो गलियों में मारे मारे ॥ ख़बर
न लेनू कुछ हैफ़ उनकी बतातो हमको सबब ये क्या
है ॥ होगैरतो क़ायिले इनायत अरु हमपै ग़ुस्सा ग़
ज़गय क्या है ॥ ॥ चौक ॥ १ ॥

जो ख़ुदही मरता बग़ैर मारे सतान उसको तू अय सित मगर ॥ कि ज़ुल्म अच्छा नहीं है ज़ालिम न ख़ुश हो जीमें बहुत सताकर ॥ कहीं न ऐसा हो फिर तू आपरे शां होपे पे दावर बरोज़े महशर ॥ हुआ जो मैं दाद ख़्वाह हक़ से तो क्या कहोगे कहो वहां पर ॥ जवाब क्या दोगे उस घड़ी तुम जो तुमसे पूछेगा सबब ये क्या है। हो ग़ैर तो क़ाबिले इनायत अरु हमपे ग़ुस्सा ग़ज़ब ये क्या है ॥ २॥ ॥ चौक ॥ २॥

तपे जुदाई से दिल है बिरियां न मुझको ख़्वाहिश व बाब की है। मये मुहब्बत के हूं नशे में न दिलको पर वाह शराब की है। न दिल में ताक़त न जिस्म में जां नमी ना आंखों में आब की है। उदास रहता हूं रात दिन मैं न फ़िक्र रंजो सवाब की है ॥ बताऊं क्या तुझको मैं ये हमदम हूं ख़ुदही हैरां सबब ये क्या है ॥ हो ग़ैर तो क़ाबिले इनायत अरु हमपे ग़ुस्सा ग़ज़ब ये क्या है ॥ ३॥ ॥ चौक ॥

कलाम बांके का ख़ूब दिल में समझले सच कहो तुझे क़सम है, बिना तो आशक़ से अपने ग़ाफ़िल तू किसलिये इस क़दर सनम है ॥ मरूं जो ग़म में ते रे ये ज़ालिम न तुझको कुछ उसका हैफ़ ग़म है। ख़बर ले लिल्लाह जल्द जाकर न कर तग़ाफ़ुल ब

ड़ा सिलमहै । कहे ये गिरधारी तेरा आशक़ मरेजो तुझबिन अजब ये क्या है ॥ हैं ग़ैरतो क़ाबिले इना यत अरु हमपे ग़ुस्सा ग़ज़ब ये क्या है ॥ ४॥

॥ ख्याल ॥ ४॥

तेरे हिज्रमें पियारे ॥ गिनता हूं शबको तारे ॥

॥ ठेक ॥

कहूं क्या मैं तुझसे प्यारे। तेरे शौक़ना बिचारे ॥
भरते हैं ग़म से नारे । ख़बर लेके मारे मारे ।
पड़े फिरते हैं बिचारे। गिनता हूं शबको तारे ।

॥ चौक ॥ १॥

उलफ़त में मैंने माना ॥ मुझे छोड़ दे ज़माना ॥
तेरी तौभी आस ताना। ना छोडूंगा तेरा जाना ॥
कोई छोड़े याकि मारे । गिनता हूं शबको तारे ॥

॥ चौक ॥ २॥

एक रोज़ तो सितमगर ॥ कर रहम बहरे दावर ।
सूरत दिखादे आकर । आशक़ को अपने दम भर ॥ जीनेके हों सहारे । गिनता हूं शबको तारे

॥ चौक ॥ ३॥

अबदुलहकीम जबसे । उसबुत पे दिल गया है।
उस दिनसे मिस्ले बाके । रोरो के दिन है कटते ।
चलते हैं ग़मके आरे । गिनता हूं शबको तारे ।४।

॥ ख्याल ॥ ५ ॥

लियाजो क़ातिलनै क़त्ल करनेको मेरे ख़ंजर निकाल करके। तौ बैठा मक़तलमें शोक़से ख़ुद मैं अपने सरको निढाल करके। न ख़ुश हो महफ़िलमे पास ग़ैरोंको अपने इतना बिठाल करके। बहुत पशेमा न होगे अयजां न आशिकोंको निकाल करके। ये क्या ग़ज़ब है के सब तौ पायें जवाब तुमसे सवाल करके॥ सवाले आशक़पे कुछ न बोले उड़ादो बात उसको टाल करके। कहाजो मैंने ये भेद क्याहै तौ बोले चुपहो जलाल करके। तौ बैठा मक़तलमें शोक़से ख़ुद मैं अपने सरको निढाल करके ॥ १ ॥

निकलतेहैं जब वो पान खाकर मकांसे मुंह अपना लाल करके॥ तौ आशक़ोंको वो बेछुरीके हैं छोड़ते बस हलाल करके॥ जो चाल चलते हैं वोतो दिल आशक़ोंके हैं पायमाल करके॥ नरफ़ जो आशक़ की देखतेहैं तौ आंखें ग़ुस्सेसे लाल करके॥ अजीब ख़सलत है इन बुतोंकी ये दिलको लेतेहैं चाल करके॥ तौ बैठा मक़तलमें शोक़से ख़ुद मैं अपने सिरको निढाल करके ॥ २ ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

कभीजो उसशोख़ फ़ितनागरके गलेमें हाथोंको डाल करके। कियाहै मैंने सवाले बोसा तो बोले आंखें निकालकरके॥ बहुतसा बकने नहीं हैं बोलोज़बाँकी अपनी संभाल करके॥ सज़ायह पाईहै हमने साहिब तुमें यहांपर बिठाल करके॥ बस उठिये यहांसे सिधारो घरको न आना इसका ख़याल करके॥ तो बैठा मक़तल में शोक़से ख़ुद मैं अपने सरको निहाल करके ॥ ३ ॥ ✦ ॥ ✦ ॥ ✦ ॥

॥ चौक ॥ ३ ॥

बयाने हाले शबे जुदाई कियाजो उनसे तो लाल करके॥ वो आंखें ग़ुस्सेसे बोले बकनाहै झूठ क्यों हमसे जाल करके॥ ये बदगुमानी तो देखो अब दुल हकीम उनको ख़याल करके॥ कहाजो अहवाले ग़म उनोसे कभी तो अय बाँके लाल करके॥ वो आंखें ग़ुस्सेसे बोले बकताहै झूठ क्यों हमसे जाल करके॥ तो बैठा मक़तलमें शोक़से ख़ुद मैं अपने सरको निढ़ालकरके ॥ ४ ॥

॥ ख़्याल ॥ ६ ॥

तुम्हारे बिन इस क़दर वो रोया कि चश्ममें हो गयेहैं जाले। ख़बर ले जलदी के तेरे ग़म्मे पड़ेहैं जीनेके आह लाले ॥ ॥ ठेक ॥ ॥

औरे सितमगर जरा तो तू मुआफ़ दिलमें कर अपने औ
र हुआले। उठाके महफ़िलसे आशकोंको तू और
ग़ैरोंके नहुं बिठाले। सताना अच्छा नहींहै दिल।
का नहर घड़ी देख बद दुआले। ये चन्द रोज़ाहै हुस्न
ज़ालिम सितमसे हाथ अपना बस उठाले। न हूजिये
मग़रूर इस क़दर हो नफोड़ आशक़ के दिलके
छाले। ख़बरले जल्दी के तेरे ग़ममें पड़े हैं जीनेके आ
हलाले ॥२॥ ॥ चौक ॥१॥
तेरी जुदाईमें अबतो हांसिल हुआहै हमको ये ज़ुल
फ़ोंवाले। के दिलहै बेकल ख़्यालमें हरदम पड़े हैं
जीनेके आहलाले। ये सुनके हमसाया मेरे कहते
हैंजबमैं करताहूं ग़मसे नाले। बुरा मरज़ है ये इश्क़
का भी ख़ुदा ही हर एकको बचाले। केजैसी इसपर
पड़ीहै ऐसी किसीपे उफ़्ताद हरगिज़ न डाले। ख़बरले
जल्दीके तेरे ग़म्मे पड़े हैं जीनेके आहलाले ॥
॥ चौक ॥२॥
कभीतो आशक पे मेहरबां होके पास अपने उसे बु
लाले। तड़प रहाहै वो तेरी फ़ुरक़तमें येक दिन सी
नेसे लगाले। बिगड़ न जायेगा इसमें कुछ तेरा पास
अपने जो तू सुलाले। उठाके अग़यार रूसियाको
पकडके आशक़को गर बिठाले। कहींतो काम।

आओना मेरीजाँ अबसये करते हो टाले बाले। खब
रलेजलदी के नेरे ग़म्मे पड़े हैं जीनेके आहलाले ॥

॥ चौक ॥ ३ ॥

मैं पेंच खानाइं मिस्ल सुम्बलजो वालदेखेहें घूंघर
वाले। नपाहे दिल बरमें मिस्ले बिजली नज़रमें जब
सेहें उसके बाले ॥ बहार आईहे फिर चमनमें हुये हैं
फिर ज़रव्म दिलके आले। बनेंगे फिर दाग़ दिल ह।
मारे यक़ींहे आनिशके परहोंकाले। बचेजहांतक
हो इन बुतोंसे पड़ैना अय बांके इनके पाले। खब
रलेजलदी के नेरे ग़म्मे पड़े हैं जीनेके आहलाले ॥

॥ ४ ॥ ॥ ख्याल ॥ ७ ॥

जुदा इलाही कभी किसीसे किसीका हरगिज़ नयार
होवे। येदर्द वोहै न दुशमनों को भि मेरे परवरदिगार
होवे ॥ ॥ टेक ॥

बताती फ़ुरक़नमें किस तरह से उसे भी नासे हक़रार
होवे। के जिसके पहलू में कोई हमदन न आशना।
और नयार होवे। सुराही साक़ी ओजाम वादा और ऐ
शो अशरत हज़ार होवे। नखुशहों मालूम दिलको ह
रगिज़ बग़लमे जब तक नयार होवे। नरूहको चैन।
जिस्ममें हो नजीको ताबो क़रार होवे। येदर्द वोहै न
दुशमनों की भि मेरे वरदिगार होवे ॥ १ ॥

न जबके आशिक पे हो न लत्फ़ न रहम हो और न प्यार होवे। बतानो फिर किस तरह से आकर के कोई तुझ पर निसार होवे। वो काम कर जिन दिल से हर येक तेरा खिजमत गुज़ार होवे। अज़ीज़ हो इसमें या के दुशमन ग़नी हो कोई के ख़्वार होवे। मिले वो झुक करके तुझ से हरदम न उसको मिलने में आर होवे। येदर्द वो है न दुशमनों को भी मेरे पर बर दिगार होवे

॥ चौक ॥ २ ॥

दिखाना शीशि में वपा है मुझको अगर्चे उमदा हज़ार होवे। वो रिन्द बदमस्त हूं में साक़ी न जिसको हरगिज़ ख़ुमार होवे। चढ़ाऊं गर ख़ुमके ख़ुम तो तोभि नशा म बदज़ीन हार होवे। क़रार क्या उसको होके जिसको न वस्ल में भी क़रार होवे। न तड़पे वयों कर यो रात और दिन के दर्द जिसका क़रार होवे॥ ये दर्द वो है न दुशमनों को भि मेरे परवर दिगार होवे॥ ३॥

॥ चौक ॥ ३॥

बचे निगाहों से इन बुतों की जहां तलक इख़्तियार होवे। बला से मर जाय ज़हर खाकर न इनसे ख़्वास्तगार होवे। जो मीर मिज़गां को देखे आय दुल हकीम इनके फ़रार होवे। छुपा ये गोशे में जी को बांके न ज़ुल्फ़ का पर शिकार होवे। न खोवे इज़्ज़त को इनसे मिलकर

न चश्म ख़लक़न में ख़्वार होवे ॥ बे दर्द वो है न दुश्म। नों को भि मेरे पर वर दिगार होवे ॥ ४ ॥

॥ ख़्याल ॥ ८ ॥

जबसे दिया दिल उसको अपना हमने समझ करके दिलदार । दिल दे हि यक दिन उसने नैन की ओर उलटे दिये बलके आज़ार ॥ ॥ ठेक ॥

क्या कहूं फंस गया जिस दिनसे दिल अपना उसके हाथोंमें । चैन नहीं यक दम दिलको रोरो के गुज़रती है रातोंमें । मै यह देता हूं यारो सुनलो कोई बातोंमें । आना ना इन खूबों की है वे महवी इनकी ज़ालोंमें । दुश्मनेजां उसके ये हुये जिसने के किया इनको दिलदार । दिल दे हि यक दिन उस नैनकी ओर उलटे दिये बलके आज़ार ॥ १ ॥

पेड़ महोब्बत का तेरी मैंने जबसे दिलमें लगाया है । आरामका फल यक दिन भी कभी नहीं उससे हमने पाया है । साथ न आया और कुछ अपने आया तो यह आया है । इश्क़में तेरे होगया दुशमन अपना और पराया है । हिज्रमें तेरे मुझको प्यारे जीना हुआ है अब दुशवार । दिल दे हि यक दिन उसने नकी ओर उलटे दिये बलके आज़ार ॥ २ ॥

रजा अलम हरदम प्यारे मुझे फ़ुरक़तमें तेरी सहना

सुनान किसीकी बात मरज़ और अपनी किसीसे नहिं कहना। थमता नहिं चश्मोंसे मेरे यक लहज़ा अश्कों का बहना। और मुंहको लपेटे बिस्तरपे ख़ामोश पड़ा रहना। भाता नहिं कुछ दिलको मेरे जबसे के हुवा तेरा दीदार। दिलदेहि यकदिन उसने नकी और उलटे दिये बल्के आज़ार ॥३॥

हुआ न हीं जिस दिनसे मुझे दीदार मयस्सर जो तेरा। जल्द ख़बरले के ग़ैर है अहवाल बहुत कुछ अब मेरा। कर बहरे ख़ुदा आशक़ की तरफ़ यक दिन तो ऐ ज़ालिम फेरा। जो अलमने हिज्रके तेरे बेतरह उस कोहै घेरा। कहु बांके किसी दिन तू आकर दिखला उसको अपना दीदार। दिलदेहि यक दिन उसने नकी और उलटे दिये बल्के आज़ार ॥४॥

॥ ६ ॥ ख़्याल ॥

रक़ीबकी तर्फ़ देखते हो इधर को भी इक नज़र पियारे। जो देखलोगे तो क्या गुना होयगा कहो तो ऊपर तुम्हारे ॥ ॥ टेक ॥

है जाय अफ़सोसकी के आदां तो पास हरबरहूरै तुम्हारे। बिठालो मजलिसमें हरघड़ी तुम करें वोरात औ रदिन नज़ारे। हो उनसे हरओ ग़ुफ़्तगु दिकायत हरदम चलाकरें चश्ममें इशारे। और मुस्तहक़ जो हों बैठने के फिरें वो

अयजान मारे मारे। बड़े न अस्सुफ़ कीजाहै उनसे न पूछो तुम बात भी पियारे। जो देख लोगे तो क्या गुना होयगा कहो तो ऊपर तुम्हारे ॥ १ ॥

तेरी जुदाई में दिलपे अयजां हमेशां चलते हैं ग़म के आरे। गुज़रता है दिन तो रोके सारा और काटता शब है गिनके तारे। अजब मुसीबत में मुब्तिला है लगा है बस गोरके कनारे। नहीं है जीने का कोई सामां है करता हरबख़्त ग़म से नारे। दिखादे सूरत तू आके आशक़ को ता के जीने के हों सहारे। जो देख लोगे क्या गुनाह होयगा कहो तो ऊपर तुम्हारे ॥ २ ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

ज़रा तो तू देखके अय रम्माल मेरे अय्याम और सितारे। बता तो मुझसे फिरे रहेंगे वो कब तक आयेंगे घर हमारे। रहेंगे कबतक कज़ी के ऊपर कब आयेंगे राहपर सितारे। मुफ़स्सिल अहवाल मुझको बतला दो पाऊं पड़ता हूं मैं तुम्हारे। करूंगा मूं मीठा मैं तुम्हारा जो देख दोगे मेरे सितारे। जो देख लोगे तो क्या गुनाह होयगा कहो तो ऊपर तुम्हारे ॥ ३ ॥

॥ चौक ॥ ३ ॥

हुआ ये बेताब वस्ल की शब जो उठके पहलू से वो सिधारे। गिरा मैं बिस्तर पे होके बेख़ुद रहा न कुछ

होश ग़मके मारे। सुनीन येक उसने हैफ़ बांके अगर्चे लाख उसको हम पुकारे। न देखा फिर करके उस। सिनमगरने यक नज़र भी तरफ़ हमारे। चला गया घरको सीधा अपने वो चुपका ख़ामोश सूध मारे। जो देख लोगे तो क्या गुना होयगा कहो तो ऊपर तुम्हारे॥ ४॥ ॥ २०॥ ख्याल॥

व़ादा करना आसां है व़ादेका निभाना मुशकिल है। सहल बहुत है उल्फ़त करना ग़मका उठाना मुशकिल है॥ ॥ ठेक॥

फ़र्ते नज़ाक़त से तुम्हे मेरे पास गर आना मुशकिल है। येतो कहो क्या मुझको भि प्यारे तुमको बुलाना मुशकिल है। बुरक़ा रुख़ से मेरी जां तुमको अपना उठाना मुशकिल है। सूरते ज़ेबा आशक़ को क्या ऐसा दिखाना मुशकिल है। दिल किसी बेकसका रखले ना तुमको जाना मुशकिल है। सहल बहुत है उल्फ़त करना ग़मका उठाना मुशकिल है॥

॥ चोक॥ १॥

उल्फ़त करना आसां है उल्फ़त का निभाना मुशकिल है। मालूम किसीको होवे न जो ये राज छुपाना मुशकिल है। जब्र करना ग़मो ईज़ामें आंसू न बहाना मुशकिल है। परवाना सिफ़्त इन शमा रुख़ोंपर दिल

काजंलाना मुशकिलहै । जांनको अपनी खोदेना ग़ौर ग़ुल न मचाना मुशकिलहै । सहल बहुत है उलफ़त करना ग़मका उठाना मुशकिलहै ॥ २ ॥

॥ चौक ॥ २ ॥

जोफ़से बीमारों को तेरे यक गाम उठाना मुशकिलहै । जल्द खबरले आकरके अबवक़्त ये जाना मुशकिलहै । देखा नहिं जाताहै ऊपरको आंख उठाना मुशकिलहै । खामोश पड़ेहैं अपना उन्हें आवाज़ सुनाना मुशकिलहै । आजाय किसीपर दिलजो किसीका उस्का छुड़ाना मुशकिलहै । सहल बहुत है उलफ़त करना ग़मका उठाना मुशकिलहै ॥ ३ ॥

॥ चौक ॥ ३ ॥

जब कहा मैंने हिज्रमें तेरे जीना अयजाना मुशकिलहै । मेरा तो बोला हंसके के हां हां मैंनेभी जाना मुशकिलहै । मुंहसे तो कहना सहलहै लेकिन जान गमाना मुशकिलहै । टुक कोभि हमने तो मरने न देखा ज़हरका खाना मुशकिलहै । क्या कहूं बांके लाल बुतोंसे दिलका लगाना मुशकिलहै । सहल बहुत है उलफ़त करना ग़मका उठाना मुशकिलहै । ॥ ४ ॥

॥ ११ ॥ ख्याल ॥

नहींहै आराम चैन उसको है जिसने देखे तुम्हारे

गेसू। वो पेंच खाताहै मिस्ले सुम्बुल नहीं ग़ल्तत इसमें यक सरेमू ॥ ॥ ठेक ॥

ज़रातो नू मुबतिलापर अपने नज़र नराहुम की कर परीरू। के रोताहै तुझ वग़ैर हरदम वो हर घड़ी आठ आठ आंसू। लगाले सीनेसे इकदिन उसको नइतना तरसा फ़िराक़ मेंतू। न मिस्ले आरुन गरोंके अयजाँने जाँहों आतिश फ़िशांनू ह रसू। बसाने अत्तार होके हरयेक तुझसे आकर के लेवे ख़ुशबू। वो पेच खाताहै मिस्ले सुम्बुल नहीं ग़ल्तत इसमें यक सरेमू ॥ १ ॥

मरज़से उलफ़त केया इलाही बचाइयो पसहर येक कोनू ॥ बुरा मरज़ है ये साफ़ बनजाना हैगा। इन्सान इसमें उल्लू। तमीज़ कुछ नेको बदकी असला नहींहै रहती उसे सरेमू। नइसकी परवा बुराकहे कोई या भला कहवे कोई बरू। अगर चे परवा भी है तो येहै मिस्ले किसी नरहां वो परीरू। वो पेंचखाताहै मिस्ले सुम्बुल नहीं ग़ल्तत इसमें यक सरेमू ॥ २ ॥ ॥ चोक ॥ २ ॥

जो यक दफ़ा भी देख लेवे चमनमें अयजाँ तुम्हारे क़दकू। तो ये यक़ीं है जिमींमें गड़जाय सर्व ख़िज़लतसे बर लबेजू। ये अर्क़में गर्क़ होके बहजाय पा

नी होकर वसनि आस्तू । जोदेखेदंदांने साफ़ रोश न वचपमे इं साफ़ तेरे पाब्वो। तो वोभी एर मिंदगी से अपना उठाये हरगिज़ न सर उपरको । योपेच। खाताहै मिस्ले सुम्बुल नहीं ग़लत इसमें यक सरे मू ॥ ३॥ ॥ चौक ॥ २॥

शबे जुदाई में याद जिस वक्त मुझको आनेहैं ज़ुल्फ़ो अबरू । तो गोया डसनेहैं दिलको बाहम हमारे मिलकरके साँप बिच्छू । हुआहै जबसे मुझे सनम का अयबांके लाल्ल इश्क़ ख़ाल्ले अबरू । तो घूर तेरव्क कोहैं चितवन से आके हर वक्त मुझको हिन्दू ॥ नज़रमें जिसदिन से खुपगया है मेरे रो बू असा कहे दिलजू । वोपेंच खाताहै मिस्ले सुम्बुल नहीं गलत इसमें यक सरेस ॥ ४॥

॥१२॥ खयाल ॥

दिखादे यक रोज़ तोतू आकरके अपनी अय यार हमको सूरत । के चैन देती नहींहे पहलू मे दिलको यक लहज़ा तेरी फ़ुरक़त ॥ ॥ फेक ॥ ॥

मेरे ही तशहीर होनेसे शहर मै हुई है मर्रमो शोरत । नहोनागर मुश्तहर मै तुझ बिनदी होती हरगिज़ न तेरी शोरत । मज़ा मना था कोई भि तुझको हुई थी जबतक न तेरी शोरत । अभीसे जानाहै तुझको

सबनि के जबसे मेरो ऊई है शोरत । यह थोड़ा यह सौं

है मुझपे जालिम बनातू दिलबर मेरी बदौलत ।

के चैन देती नहींहै पहलू में दिलको यक लहज़ा ने

री फ़ुरकत ॥ १ ॥ ॥ चौक ॥ १ ॥

हमीसे चलता है उलटा हरदम हमीसे रखता है तू

अदावत । हमारे चांहनेसे अय मेरी जाँ ऊई ज़माने

का तरी साँहत । न पहले आशक़ था कोई तेरा नथी

किसीको तेरी मोहब्बत । नकोई वाक़िफ़ था नाम

से भी किसीको मालूम थोन सूरत । और अब ह

ज़ारां हरएहैं आशक़ तुह्मारे अल्लाह रे तेरी क़ुदरत ।

के चैन देती नहींहै पहलूमें दिलयक लहज़ा तेरी

फ़ुरक़त ॥ २ ॥ ॥ चौक ॥ २ ॥

अजब ज़मानाहै जिसक़दर मुझको उन से पैदाऊई

मोहब्बत । तो उसको और दूनी उसके बदलेमें मुझ

से होती गई अदावत । यहाँ तलक तो मेरी तरफ़ से म

री है दिलमें उन्होंके नफ़रत । जो नाम लेता है मेरा ।

कोई तो कहते हैं वो बसबब कदूरत । मा ज़क उस्का

करो यहांपर किसीकी आई तो नहीं है क़यामत ।

के चैन देतीनहीहै पहलूमें दिलको यक लहज़ा

तेरी फ़ुरक़त ॥ ॥ चौक ॥ ३ ॥

बनाती अय वांके लाल तेरो ये किसके ग़मने करी

है हालत। के लबतोहैं खुश्क चश्महैं नम पड़ीहै च
हरे की ज़र्द रंगत। है आहज़ारी लबोंपे हरदम ये के
सी सरपर पड़ीहै आफ़त। मगर कहींपर हुयेहो मा
इल किसीपे तो आईहै नबीअत। बग़ैर माइल हु
ये किसीपर पहुंचती हरगिज़ नहीं ये नौबत। के चै
न देती नहींहै पहलूमें दिलको यक लहज़ा तेरी फ़
रक़त ॥ ४ ॥ ॥ ख्याल ॥ २३ ॥
जो रहम खाओगे उसके ऊपर तो क़हर होगा अज़ा
ब होगा। सताओ आशक़ को जांह तलक हो इ
सीमें तुमको सवाब होगा ॥ ॥ ठेक ॥ ॥
उठादोगे गर हिजाब रुख़से तो क्या गुना अय जना
ब होगा। दिखादोगे रूखे रौशन अपना तो कुछ न
इसमें अज़ाब होगा। यक़ीन है यह के दूर जिस द
म तुम्हारे रुख़से नक़ाब होगा ॥ तो देखकर कुछ तो
आशक़ों के दिलोंसे कम इज़्तिराब होगा। तसल्ली
होवेगी उनको अयजां और तुमको हासिल सवा
ब। सताओ आशक़ को जांह तलक हो इसीमें तु
मको सवाब होगा ॥ १ ॥
दिवाने महशर में जबके क़ाज़ी खुदा खुदा पे जनाब
होगा। जुदा जुदा हर बशर का जिस वक़्त जां हिसाबो
किताब होगा। हरेक अज़ो बदनसे हर यकके ।

सवाल्लो जवाब होगा। किसीने गर यहां किसीके ऊ
पर ज़ुल्म किया था इताब होगा। कहोगे क्या उस घ
ड़ी कहो तो जो आके रोज़े हिसाब होगा। सताओ आ
शक़ को जहं तलक हो इसीमें तुमको सवाब होगा
॥२॥ ॥ चौक ॥२॥
समझलो खूब अपने दिलमें इसको के एक दिन।
इन क़िताब होगा। न फिरये सूरत रहेगी असला न
हुस्नमें आबो ताब होगा। न पूछेगा कोई बात हर
गिज़ हर एकको इजिति नाब होगा। ये कोई दिन
कीहै बात ज़ालिम न तू न हम ना शबाब होगा।
सताओ आशक़ा को जहं तलक हो इसीमें तुमको
सवाब होगा ॥३॥ ॥ चौक ॥३॥
बग़ैर दिलबर अगर मयस्सर हज़ार जामे शराब हो
गा। न भाये गा बलके और जलकर के हिज्र में जीक
बाब होगा। न अपने पहलू में जब तलक कि वो गैरते
माह ताब होगा। न सब्रो आराम होगा हांसिल न दि
लका कम इज़्तिराब होगा। मिलेगा जब तक न वो सि
तमगर ये बांके तब तक अज़ाब होगा। सताओ आ
शक़ को जहं तलक हो इसीमें तुमको सवाब होगा।
॥४॥ ॥ ख्याल ॥ १४॥
बनाके गुस्से से मूंजो हमदम बिगड़ के उसने सुना

ई गाली । तो मैंने ख़ुश होके मिस्ले मिश्रीयो क़न्द शक्कर के खाई गाली ॥ ठेक ॥

तुम्हारे मुँसे तुम्हारे उपरशाक़ कोहे अयजाँये भाई गाली । के ख़ुद शरारत से आप उनोने है छेड़ कर तुमको खाई गाली । कहूं क्या शरबत या के है । शहद या दूध है या मलाई गाली । या क़ंद मिश्री है या है हलुआ शकर है या है मिठाई गाली ॥ सुनीन ऐसी कहीं किसीसे है जैसी तुमने सुनाई गाली । तो मैंने ख़ुश होके मिस्ले मिश्रीयो क़न्द शक्कर के खाई गाली ॥ १ ॥

ज़बाँ पे उस बेवफ़ा सितमगर के हाय जिस वक़्त आई गाली । और उसने तेवर बदल के हम दम बिगड़ के मुझको सुनाई गाली । तो क्या कहूं तुझसे मैं जो ख़ुश मुझको उस घड़ी उसकी आई गाली । समाया फूला न जिस्म मैं मैं ये दिलको कुछ मेरे भाई गाली । के लुत्फ़ भूला न जिसका अबतक कुछ ऐसी सुनाई गाली । तो मैंने ख़ुश होके मिस्ले मिश्रीयो क़ंद शक्कर के खाई गाली ॥ २ ॥

अजब मज़ा है के जिसको यकबार उसपरीने सुनाई गाली । तो उसने दुसरा के आप ख़ुद और छेड़ कर आप खाई गाली । न फूला जामे में वो समाया

हुआये ख़ुश जबके पाई गाली। लगाया यक के
क़हा बुलंद और ख़ुशीसे उसने उठाई गाली ॥

अजब सिफ़्त है के वस्फ़ खट्टी खटाई काहे मिठा
ई गाली। तो मैंने ख़ुश होके मिस्ले मिश्रीयो कंद
शक्कर के खाई गाली ॥ ३ ॥

नये मज़ामीकी तुमने अयबांके ख़ाल जोये बना
ई गाली। बनाके यार और दोस्तों को है अपने।
जिसदम सुनाई गाली। तो ख़ुश हुये सुनके बोये।
दिलमें हुई ये उनको मिठाई गाली। उदू जो थे मि
स्ले रंग कट गये बनीये उनको खटाई गाली। व
गर ना जिसने सुना कहा उसने वाह वा क्या बनाई
गाली। तो मैंने ख़ुश होके मिस्ले मिश्रीयो क़न्द
शक्कर के खाई गाली ॥ ४ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ग़ज़ल ॥

जनोंको भरोसा है तेरे क़दम का। गजानन तुही रखने वाला शरम का १ रिषी और मुनी देव संसार सारा। सदा ध्यान धरते हैं तेरे क़दम का ॥ २ ॥ कहें बेद चारों छहों शास्त्र योंही। के पूजन प्रथम ही से गण है प्रथम का ॥ ३ ॥ सदा बास उरमें करो आप मेरे। बिना आपके सुख नहीं एक दम का ॥ ४ ॥ कहै बांके मेरा करो पार बेड़ा। हमेशा रखो हाथ अपने करम का ॥ ५ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

मुझे तो तेरे नाम का है सहारा। नहीं और कोई है दूजा हमारा ॥ १ ॥ पड़ा ग़मके दरिया में खाना ग़ोते। नज़र हमको आता नहीं है किनारा ॥ २ ॥ तेरा नाम शंकर सभी दुःख मोचन। कृपालो में तुझसा न कोई निहारा ॥ ३ ॥ सताती हैं दुनियां की आफ़त तभी तक। कि जब तक तेरा नाम दिल में न धारा ॥ ४ ॥ कहै दास बांके अचल भक्ति दीजे। मुझे तो सदा ही भरोसा तुम्हारा ॥ ५ ॥ २ ॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

तुही है मेरी शर्म का रखने वाला। तेरा दीनों दुनिआ में है गा उजाला ॥ १ ॥ तेरा नाम शंकर कृपा कर

नेवाला। कृपा मुझपे कर अपनी हे चन्द्रभाला ॥ २॥ तुम्हें वेद चारों कहे हैं भक्तवत्सल ॥ तुम्हारी शरणमें सदा रहने वाला ॥ ३॥ जहां तेरे दासोंपे तकलीफ़ आई। उसीदम शिताबी सभी दुःख टाला ॥ ४॥ ज़िमींपर के किणके सितारे भि गिन ले। गुणों को तेरे कौन है गिन्नेवाला ॥ ५॥ कहे बांके वर और अभय मुझको दीजे। मैंने सीस चरनोंमे है तेरे डाला ॥ ६॥

॥ ग़ज़ल ॥ ३॥

॥ आशक़ाना ॥

क्या गुनह मैंने कहो आपका अयार किया ॥ बोलना जिस्से कि कम आपने एक बार किया १ वायदे वस्लतो उस शोखने सौबार किया ॥ पर वफ़ा उसको न भूलेसेभि इक बार किया ॥ २॥ वाह बेरहमीये झुंझलाके कहा बस नबको। दर्द दिल अपना जो मैंने कभी इज़हार किया ॥ ३॥ नासेहा मैंतो न मिलता कभी उस्से हरगिज़। क्या करूं दिलने मेरे मुझको है लाचार किया ॥ ४॥ झूठे वादोंका तेरे क्या हो यक़ीं दिलको मेरे ॥ कौनसा तूने वफ़ा अपना है इक़रार किया ॥ ५॥ क्यों न तावे हो दिलो जां से तुम्हारा हर येक। तुम को ख़ूबोंका है अल्लाह ने सरदार किया ॥ ६॥

क्यौं न फिर जीनेसे दम अपना ख़फ़ा हो बाँके। वा यदे वस्ल से उस शोख़ने इनकार किया ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ४ ॥

तेरे हुस्नपर जबसे माइल हुआ। न आराम इक दिनभि हासिल हुआ ॥ १ ॥ ग़मो हस्रतो दर्द रंजो तअब। मुहब्बतमें तेरीये हासिल हुआ ॥ २ ॥ शमा आई नामाह ख़ुरशीदे अनवर। नइक उसके मूं के मुक़ाबिल हुआ ॥ ३ ॥ है मक़्तल में क़ातिल के इक वार का। कलेजा हुआ मर हुआ दिल हुआ ॥ ४ ॥ मिला उसको यक दम न आराम चैन। जो तुमपर मेरीजान माइल हुआ ॥ ५ ॥ रहा फिर न ज़िंदा वो हरगिज़ कि जो। तेरी तेग़े उलफ़त का घाइल हुआ ॥ ६ ॥ हज़ारों हीं अय बाँके दुशनामदीं ॥ मैं जब उनसे बोसेका साइल हुआ ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ५ ॥

ज़रातो चेहरेसे अपने उठादे यार नक़ाब। कि तेरे दीद बग़ैर अबतो जानहै बेताब ॥ १ ॥ नपूछ हाल कुछ अपने मरीज़े उलफ़त का ॥ तेरी जुदाईमें एक दम नहींहै उसको ताब ॥ २ ॥ कभीतो सीनेसे मिलजाय यह कहो तो सही ॥ रहैगा कब्तलक। हमसे यह इजितिनाब जनाब ॥ ३ ॥ जो क़द है।

सर्वनो आंखें हैं नरगिसी फ़त्तां। जो ज़ुल्फ़ लैल है उसकी तो चेहरा है मुहताब ॥ ४॥ इलाही ख़ैर हो दिल बेतरह धड़कता है। नक़ासिद आया वहांसे न आया ख़तका जवाब ॥ ५॥ जो कोई देखता है मुझको ग़मसे रोता है। तुम्हारे इश्क़ने इहां तक किया है हाल ख़राब ॥ ६॥ मिले जो मुझको वो बांके तो मैं य ह उस्से कहूं ॥ पिलादे वस्लकी लिल्लाह मुझको या र शराब ॥ ७॥ ॥ ग़ज़ल ॥ ६॥

वो ख़फ़ा है मुझसे जो बेवफ़ा मुझे फ़िक्र है यही रोज़ शब ॥ हुआ क्या सबब हुआ क्या सबब हुआ क्या सबब ॥ १। तेरा कुश्तये ग़म जिये अभी अगर येक बारभी अय मसीह। तू हिलादे लब तू हिलादे लब तू हिलादे लब ॥ २॥ ले ख़बर के तेरा मरीज़े ग़म मरे ज़हर खाके जो अय सनम ॥ नहीं कुछ अजब नहीं कुछ अजब नहीं कुछ अजब नहीं कुछ अजब ॥ ३॥ कहा उसने मुझसे बिगड़के जा कभी मैने बोसा जो ज़ुल्फ़का। किया है तलब किया है तलब किया है तलब किया है तलब ॥ ४॥ हुये बरसों इश्क़में अय परी न हुआ विसाल तेरा कभी ॥ मुझे एक शब मुझे येक शब मुझे येक शब मुझे येक शब। ५। नहीं है फ़ उसको हमारा ग़म यक ज़राभि जिसके के

ग़म मैं हस। हुयेजाँ बलब हुयेजाँ बलब हुयेजाँब लब हुयेजाँ बलब ॥ ६ ॥ कभी तो पिला मुझे तुंद ख़ा हैं तरस्ते शरबते वस्लको ॥ तेरे रोज़ शब तेरे रोज़ श ब तेरे रोज़ शब तेरे रोज़ शब ॥ ७ ॥ नहीं हर्ज इसमें कु छ है परी जो सुलाले पास मुझे ज़री ॥ अगर येक श ब अगर येक शब अगर येक शब अगर येक शब ॥ ८ ॥ यही दिल पे अपने रहा अलम हुआ हमसे बाँके न वो वहम ॥ कभी लब बलब कभी लब ब लब कभी लब बलब कभी लब बलब ॥ ९ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ७ ॥

फ़ुरक़त में आपकी हमें रोना तमाम रात। अश्कों से आसनीं को भिगोना तमाम रात ॥ १ ॥ तंग आके मेरे शोरसे हम साया कहते हैं ॥ न ये हमको सोने देना न सोना तमाम रात ॥ २ ॥ हैरान हूँ मैं ख़ुद कि मुझे क्या हुआ है यह। हंसना तमाम दिन है तो रोना तमाम रात ॥ ३ ॥ सीखा तुम्हारी याद ने है यह निराला ढंग। नश्तर जिगर में मेरे चुबोना तमाम रा त ॥ ४ ॥ क्या पूंछना है मुझसे तू बाँके बताऊं क्या ॥ होता नहीं है यक घड़ी सोना तमाम रात ॥ ५ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ८ ॥

इस क़दर मुझपे सितम औ सितम ईजाद न कर।

देख पछ्तायगा फिर हाथसे बरबाद नकर ॥ १ ॥
मैंजो उस शोख़से कहताहूं के बेदाद नकर ॥ सुन
के कहताहै कि ख़ामोश हो फ़रयाद नकर ॥ २ ॥
मैंतोहर लहज़ा तुझे याद किया करताहूं । तू नहीं
करता किसी लहज़ा मुझे याद नकर ॥ ३ ॥ बैठे बि
ठलाय किया नाउसे बरहम आख़र ॥ मैंजो कह
ताथा कि शिकवा दिले नाशाद नकर ॥ ४ ॥ मुन्त
ज़िर देरसे बैठाहूं झुकाये गरदन ॥ क़त्ल करनेमें क
मी मेरे अय जल्लाद नकर ॥ ५ ॥ कुछतो कर खौफ़े
ख़ुदा दिलमें अय ज़ालिम अपने ॥ दिले उश्शाक़ ।
को इस तरह से बरबाद नकर ॥ ६ ॥ अपना तो क़ौ
लयेहै बांके जो चाहे उसे चाह ॥ जो कोई भूले तुझे
तूभी उसे याद नकर ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ७ ॥

ग़रूर इतना नहुस्न पर कर न ख़ुशहो उश्शाक़ को
सताकर ॥ येचंद रोज़ाहै अय सितमगर ज़रा तो ख़ौ
फ़े ख़ुदा किया कर ॥ १ ॥ दिखावे वोरश्के महजो
चेहरे को अपने बुरका ज़रा उठाकर ॥ तो येक दम्मे ।
गिरे फ़लक़ से ज़मीपे ख़ुरशेद थर थराकर ॥ २ ॥
लियाजो सोनेमें बोसा मैनेतो बोले इसतरह कस
मसाकर ॥ बता तो हमको तू अय ज़ालिम मिला ।

तुझे क्या हमें सताकर ॥ ३ ॥ यह मेरी जानिब से के ई कहदेवे उस मसीहासे इतना जाकर ॥ लो मरगय है तुम्हारा आशक़ जिलादो ठोकर से उसको आ कर ॥ ४ ॥ बयांहो सैयाद पुर जफ़ाके सितम का क्या कोई यह तो देखो । जो छोड़ा क़ैदे क़फ़स से मु झको तो छोड़ा ज़ालिमने पर उड़ाकर ॥ ५ ॥ हज़ार सीनेमें गर छुपाया बचाया नज़रोंसे लाख उनकी । न छोड़ा पहलू में दिलको हरगिज़ वो लेगये आख़र शचुराकर ॥ ६ ॥ सवाल बोसेका जब किया है तो बोला कुंझुला के यों वो बांके । ज़बांको रोको कहीं न ऐसा हो जाओ इहांपर से मार खाकर ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ८ ॥

इस तरह रखते हैं दिलसे तुझे अय जान अज़ीज़ । जिस तरह जानको रखता है हर इन्सान अज़ीज़ । ॥ १ ॥ साथ अग़ियार के शबको न फिराकर बाहर ॥ तुझसे कहना है मैं लिल्लाह कहा मान अज़ीज़ ।२। देख पाता जो कभी ख़्वाबमें सूरत तेरी ॥ हुस्न यूसुफ़ का न फिर रखता यक़ीं जान अज़ीज़ ॥ ३ ॥ शौक़ से जो तुमें दरकार हो लो अय साहिब ॥ दियारा है मुझे तुमसे न है जान अज़ीज़ ॥ ४ ॥ येक दिन तुमने न पूंछा के है क्या हाल तेरा ॥ येही दिलमें रहा अपने सदा ।

अरमान अज़ीज़ ॥ ५ ॥ किस तरह दिल में जगह दूं न मैं वां के मेरे । फ़ुर्क़ते यार में है हसरतो अरमान अज़ीज़ ॥ ६ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ ८ ॥

फंस गया जब से तेरी ज़ुल्फ़ में दिल अपना सनम । क्या कहूं तुझसे कि हम ॥ दर्द फ़ुर्क़त से तेरी चैन नहीं है यक दम ॥ ले ख़बर कर न सितम ॥ १ ॥ दिल दिया जान भि दी तो भि तू अपना न हुआ । है बड़े हैफ़ की जा ॥ बेवफ़ा इतना न बन तुझको ख़ुदा की है क़सम । रहम कर अब तो सनम ॥ २ ॥ ध्यान में तेरे शबो रोज़ गुज़रती है मुझे ॥ याद कर कर के तुझे । येक दिन भी न हुआ सीने से न हाय बहम ॥ है यही दिल पे अलम ॥ ३ ॥ डर है क़ासिद न कहीं हाथ क़लम हों तेरे । वर्ना जो कुछ कि मेरे ॥ साथ उस शोख़ सितमगर ने किये हैंगे सितम । भेज दूं कर के रक़म ॥ ४ ॥ पूछे गर तुझसे जो वो इतना यह कहना उनसे । क्या कहूं मैं तुमसे ॥ हिज्र ने आपके उसको ये किया है बेदम । सांस लेना है अहम ॥ ५ ॥ शुक्र सद शुक्र के आज इतना तो उसने पूछा ॥ ख़ैर है हाल है क्या ॥ सच कहो सच कहो तुम तुमको ख़ुदा की है क़सम ॥ चश्म हैं किसलिये नम ॥ ६ ॥ तुझको क्या तेरी बला से मरे या कोई जिये । ख़ूने दिल अपना पिये ।

साथ ग़ैरोंके तू जा ऐश उड़ा अपने वहम। तुझको है काहेका ग़म ॥७॥ देखता जो है मुझे हिज्रमें तेरे मुस्तर। यों कहे है रोकर ॥ किसकी फुरक़तने तुझे दरहम बरहम ॥ किसका है दिलपे अलम।८। दिल तो क्या चीज़ है अय जान तुम्हारी खातिर। जान भी है हाज़िर ॥ तुम जो चाहो तो अभी भेज दूं सर करके क़लम ॥ शक नहीं इसमें सनम ॥९॥ क्यों न मुझको न दिलो जांसे हो हर येक तेरा ॥ तू है वो माह लक़ा। ऊस्न यूसुफ भि तेरे ऊस्नके है सामने कम ॥ भर सके क्या कोई दम ॥१०॥ अबके मिलजाय वो बांके तो मै यह उससे कहूं। कब तलक सदमे सहूं ॥ इससे बहतर तो यह है खेंचके तू तेग़ दुदम ॥ सरको बस करदे क़लम ॥११॥

॥ ग़ज़ल ॥१०॥

हंसना कहां मज़ाक़ कहां दिल लगी कहां। वो जोश अंधेबान कहां वो खुशी कहां ॥१॥ आरामो चैनो सब्रो सकूनो क़रारो दिल ॥ तुम सबतो लेचुके कोई शै अब रही कहां ॥२॥ इश्वा हो या हया हो तग़ाफुल हो या कि नाज़ ॥ आशक़ के क़त्ल में हैं ये करते कमी कहां ॥३॥ फ़रहादो क़ैसो वामिक़ो महमूदो नल अयाज़ ॥ सब चलबसे हैं इनमें से।

बाक़ी कोई कहां ॥ ४ ॥ आहो फुगांहै शोरहै नाला है दर्दहै । ग़महै अलमहै यासहै लबपर हमीं कहां ॥ ५ ॥ गुस्सा लड़ाई गालियां झिड़कीहै हर घड़ी । अगलीसी खोबूतानो गई वोतेरी कहां ॥ ६ ॥ वो शोकनीरे वस्लसे उसके अय बांके लाल । पूरी हमारे दिलकी तमन्ना हुई कहां ॥ ७ ॥ ११ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

उस बुतसेहो कभीतो मुलाक़ात रातको ॥ करताहूं हक़से मैंये मुनाजात रातको ॥ १ ॥ दिनको मिले मिले ना मिले इसका ग़म नहीं ॥ आयाकरे वो पासमेरे रात रातको ॥ २ ॥ मैंने शबे विसाल में पूछाजो हाल दिल ॥ ये लिख दियाकि करते नहिं बात रातको ॥ ३ ॥ ढलजाय रात खेलमें यांत रंजके कहीं ॥ इस वासते मैं खाना रहा मात रातको ॥ ४ ॥ बांके कजीपे अपना मुक़द्दर रहा क़दीम ॥ दम भर हुई ना उस्से मुलाक़ात रातको ॥ ॥ ५ ॥ १२ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

मैंक्याहूं उसपै दीवाना अहा हाहा ओहो होहो । वो शमअ़है मैं परवाना अहा हाहा । ओहो होहो ॥ १ ॥ पिलादे जाम वो साक़ी नरहे जिस्से हुई बाक़ी । कहूं मैं होके मस्ताना अहा हाहा ओहो हो हो ॥ २ ।

बहुत ढूंढा उस हबजा न पाया पर कहीं असला । मिला बस दिलही में जांना अहाहाहा ओहो होहो ॥ ३॥ यहां आया वो बाज़ीगर हरेक सूरत में हो अज़हर ॥ किसीने भिन पहचांना अहाहाहा ॥ ओहो होहो ॥ ४॥ जहांतक होसके बांके तो वो कर काम स्यां जिस्से ॥ कहे यह दंग होदांना अहाहाहा ओहो होहो ॥ ५॥ १३॥

॥ ग़ज़ल ॥

हरगिज़ मिलूं न उस्से के जिसको ग़रूर हो ॥ सूरत में वो परीहो वया रश्के हूर हो ॥ १॥ है दूर वो हि यारके जो दिलसे दूर हो ॥ हरदम हर यक लहज़ा गो अपने हुज़ूर हो ॥ २॥ नज़दीक भी वो हि है जो दिलसे नज़ीक हो ॥ ज़ाहिर के देखनेमें अगर लाख दूर हो ॥ ३॥ छोड़ेगी यक कोभि न ज़िंदा कहीं अजल ॥ बुज़दिल हो इसमें कोई ग़रज़ याके सूर हो ।४। सद हैफ़ उसको बांके न हो वे ज़रा ख़याल ॥ संगे अलम से जिसका के दिल चूर चूर हो ॥ ५॥ २४॥

॥ ग़ज़ल ॥ २५॥

ख़फ़ा न हो इस क़दर ऐ साहिब ज़रा तो सुनलो इधर तो देखो ॥ नहीं हो गर बोलते न बोलो मेरी तरफ़ यक नज़र तो देखो ॥ १॥ तहे मुक़द्दर के आज मुझको न पाया मजलिस में अपनी जिसदम ॥ तो बोले वहां

भी है या नहीं कोई जल्द जाकरके घरतो देखो ।२॥
इलाज इस बद गुमांका क्याहो मैं मरगया तो हिला
के शाना ॥ वो बोले मरक़द मैलो उठो अब कहां न
लक इधरतो देखो ॥३॥ मुहाल होगा निकलनाव मेरा
हांसे न पाओगे राह नाक़ याम न ॥ तुम उसके कूंचे
में ख़िज्रे रहबर कभी किसी दिन गुज़रतो देखो ।४।
तुमारे आशक़ का दिल खुशीसे नहीं है किस तरह
देखें बहता ॥ तुम उसके सीनेपै पैर अपना ज़रा मेरी
जान धरतो देखो ॥५॥ वहुतेरी चाहां न जाऊं उस शो
ख़के यह आख़िरको खेंच लाया ॥ न छोड़ा हरगिज़
हमारे जज़बेका कोई ऐसा असरतो देखो ॥६॥
वो कौनसा शख़्स है जो बांके नहीं है अफ़सोस
मुझपै करता ॥ मगर मैं अपनी ज़बांसे उफ़ भी नहीं
हूं करता जिगरतो देखो ॥७॥ ॥२५॥

॥ ग़ज़ल ॥ २६ ॥

उम्र भर जिस्के लिये जान घुलाई अपनी ॥ हैफ़
उस शोख़ने सूरत न दिखाई अपनी ॥१॥ उम्र गुज़
री हमें चलते हुए पर उस दरतक ॥ न हुई ख़ूबिये
क़िस्मत से रसाई अपनी ॥२॥ अपने जामेमें फूला मैं
न समाता हरगिज़ ॥ होती उस रश्के चमन तक जो
रसाई अपनी ॥३॥ शख़्सने वस्ल मिलैगा न किसी

जनोसीनेसे लगाले ॥ ७ ॥ बोला यह ख़फ़ा होके चलो होश करो वाह ॥ कछुवेकी तरह आपने भी पैर निकाले ॥ ८ ॥ मक़तलमें दमे क़त्ल यह क़ातिलको दुआ मैं । देताहूं नज़र से तुझे अल्लाह बचाले ॥ ९ ॥ बे बोसा लिये आज तेरे दरसे मैं अय् बुत ॥ टलनेका किसी तरह नहीं लाख बहाले ॥ १० ॥ उलफ़तका तो जब लुत्फ़ है अय् बांके जो दर पेश ॥ आजाय कहीं तुझको तो खुश होके उठाले ॥ ११ ॥ १९ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ २० ॥

तुम्हारा बंदाहूं ख़ादिम हूं ख़ाकसार हूं मैं ॥ फ़िदा मैं तुमपे दिलोजानसे अय्यार हूं मैं ॥ १ ॥ ज़रातो शिक्क दिखादो तुम्हारी फ़ुर्क़तमें ॥ क़रार जिसको नहीं है वो बेक़रार हूं मैं ॥ २ ॥ बग़ैर मर हमे वस्लजिसका इलतियाम नहीं ॥ तुम्हारे खंजरे अबरू का वो फ़िगार हूं मैं ॥ ३ ॥ ख़ुदाके वास्ते कर रहम अबतो अय् ज़ालिम ॥ हवास खोसक़्हरा ग़मसे इंतिशार हूं मैं ॥ ४ ॥ न किस तरह ग़मे जानाको दूं जगा दिलमें ॥ कि ग़मको ग़म है मेरा ग़मका ग़मगुसार हूं मैं ॥ ५ ॥ न पूंछो हमदमो अहवाल मुझसे कुछ मेरा ॥ बला नसीब परेशान रोज़गार हूं मैं ॥ ६ ॥ इधर बी बहरे खुदा इक नज़र तबाह्हुम की ॥ तुम्हारे लुत्फ़का अय्

जां उमेद वारहूं में ॥ ७ ॥ नहीं मलाल उसे कुछवी जिसकी फ़ुरक़तमें । वसाने अब्र हरेक लहज़ा अश्क बारहूं मैं ॥ ८ ॥ नहीं है वो मेरे बरमे नहो पअय बांके ॥ हमेशा उसके नसव्वुर से हम किनारहूं मैं ॥ ९ ॥ २० ॥

॥ ग़ज़ल ॥ २१ ॥

हम दिल लगाके यार से लाचार होगये । ज़ुल्फ़ों मेंजबसे उसकी गिरफ़्तार होगये ॥ १ ॥ करनेलगे रहम की जगह पर जफ़ा ओ ज़ोर ॥ दिल लेके और भीवो दिलाज़ार होगये ॥ २ ॥ अबतो ख़ुदाके वास्ते लिल्लाह ले ख़बर ॥ आशक़ तुम्हारी चश्मके बीमार होगये ॥ ३ ॥ आयेथे उनसे कहके न आयेंगे आजहम ॥ फिरवह के जानेके लिये तैयार होगये ॥ ४ ॥ सोये नहीं हैं हिज्रमें यक पल ख़ुदागवाह ॥ जबसे तुम्हारी चश्मके बीमार होगये ॥ ५ ॥ पूंछा न तुमने हफ़्ते यकवार रातको ॥ हमतो तुम्हारे दर पे कई बार होगये ॥ ६ ॥ क्या पूंछता है बांके बताऊं मैं क्या ख़ता ॥ दिल देके उनको मुफ़्त गुनह गार होगये ॥ ७ ॥ २१ ॥

॥ ग़ज़ल ॥ २२ ॥

किसीने कबी वांजो फ़रयाद की है । तो और उसने सुनकरके बेदाद की है ॥ १ ॥ यहां तकतो ज़ालिम ने बेदाद की है ॥ कि लबपर सदा मेरे फ़रियाद की है

॥२॥ न है नेग़ारकवू नसिर किसलिये मैं । वोमेरी है मरज़ी जो जल्लाद की है ॥३॥ मुरक्के में दुनियां की नसवीर बाक़ी ॥ नखुसरो न शीरीन फ़रहाद की है ॥४॥ सितम है न अपने हुये वो भी हरगिज़ ॥ जिनों के सबब जान बरबाद की है ॥५॥ नहीं उसको भ्रला हूं अय जान मन मैं ॥ जो बात आपने मुझसे दूर शाद की है ॥६॥ परी की है नम हूर की है बांके । जो पुर नूर शिक्ल आदमीज़ाद की है ॥७॥२२॥

॥ ग़ज़ल ॥२३॥

आहकी काश वहां नक जो रसाई होती ॥ दिलमें उस बुनके भि यक आग लगाई होती ॥१॥ बोलना तुझको नथा हमसे न बोला होता ॥ शिक्ल ही अपनी किसी तरह दिखाई होती ॥२॥ है यक़ीं पंद न फिर भूलके करता हरगिज़ ॥ सूरते यार जो नासेह को दिखाई होती ॥३॥ आवे वस्लत से किसी रोज़ तो तूने अपने ॥ मेरे दिलकी लगी अयजान बुझाई होती ॥४॥ तुमको आना नथा मंज़ूर न आये होते ॥ पर क़सम झूठी तो बांकेसे न खाई होती ॥५॥२३॥

॥ ग़ज़ल ॥२४॥

कहते हैं मुझसे वो के तुमें अब सलाम है ॥ हमसे नबात करना कभी यह कलाम है ॥१॥ वो कौन है

जो शोक़ता तेरा नहीं बता ॥ बन्दा अगर है सर्वनौ न र गिम ग़ुलाम है ॥२॥ क्या होगये यह जितने थे वज़मे जहानमें ॥ दाराहै क़ैक़वादहै जम है न जा महै ॥३॥ क़ानिल मसकता छोड़ना बिसमिल्ल को अपने तू ॥ यक वार और भी हो के क़िस्सा तमाम है ॥४॥ वादे का तेरे क्या हो यक़ीं दिल को अय परी ॥ जिसको क़रार है न कभी कुछ क़याम है ॥५॥ सीना फ़िगार ग़ममे जिगर खूं लबोंपे आह ॥ रोनेसे रात दिन तेरे आशक़ को काम है ॥६॥ गेसू छुटे हैं बांके यह रुख़सार यार पर ॥ या बांधा सुल्क दीनपे काफ़िर ने लाम है ॥७॥ २५॥

॥ ग़ज़ल ॥

वज़्म में ग़ैरोंको पास अपने बिठाना छोड़दे ॥ अय सनम जल्ने हुओंका अब जलाना छोड़दे ॥१॥ बोला कुंफलाकर कहोतो कौन हो तुम तुम को क्या ॥ जब कहा ग़ैरोंके घर अय यार जाना छोड़दे ॥२॥ देखले यक बार गर मेरे दिले बेताब को ॥ आस्मां पर वर्क़ अपना तिल मिलाना छोड़दे ॥३॥ मर गया आशक़ तेरा अब सोग लाज़िम है तुझे ॥ पान खाना छोड़दे मिस्सी लगाना छोड़दे ॥४॥ देख कह देते हैं ये ऐसा न हो पछ

ताओ फिर ॥ आशिक़ों का हरघड़ी अपने सताना छोड़दे ॥ ५ ॥ इश्क़ वो शै है जो लेउठकर सुबह को इसका नाम ॥ ग़ुस्सा और ग़मखाय दिनें आबो दाना छोड़दे ॥ ६ ॥ मैं वो ग़मगी हूं अगर जाऊं परसैरे चमन ॥ देखकर ग़ुंचा भि मुझको मुसकुराना छोड़दे ॥ ७ ॥ जबके तुम महबूबे आलम ठहरे तो फिर किस तरह ॥ कहिये तो कोई तुम्हारा आस्ताना छोड़दे ॥ ८ ॥ मै न छोड़ुंगा ऐ बांके जाना कूये यारका ॥ लाख तू मुझसे कहे गर व्हांका जाना छोड़दे ॥ ९ ॥ ✥ ॥ इतिः ॥

॥ दोहा ॥

दशमी गुरु आषाढ़ सुदी जन्म ग्रन्थ दिन जान
सम्बत बिक्रम भूप को बसु युग निधि शशि मान

इति गुलदस्ता बांकेलाल सम्पूर्णम्

लिपिकृतं रामप्रसा
सं. १९४८

यह ख़यालात तुर्रेकी नवीन २ पुस्तके हैं

जो कि मुन्शी सुखलाल शाहदरे वाले शागिर्द लाला भैरोंसिंहजी उस्ताद अम्बाले वाले की बनाई हुई जोकि आज़दिन तुर्रेके गानेमें बहुत मशहूर हैं इन पुस्तकों को ज़रूर २ देखो एक से एक अद्भुत और क़ाबिल दीद हैं बहुत शुद्ध नई छपी हैं ॥

गुलज़ार सख़ुन	१)	चमनबे नज़ीर	।।)	क़िस्सा सालंगा	=)	नक्लसुलैमानीना	-)
तुर्रा ४ भागमें	०	नागरी क़ीमन	०	की बहुननौरंगा	०	टिक क़ीमन ··	०
बुधबिलास चार	।।।)	मजमउल अश	।=)	गुलज़ार सख़ुन	=।।)	सकुंनलानाटिक	≡)
४भागमें ····	०	आर नागरी ··	०	कलगी क़ीमन	०	फ़र्रुख़सभानाटि	-)
ख़याल चौबीसी	।।)	गुलशनबहार	।-)	लावनी चेतनथा	-।।)	क क़ीमन ····	०
चार ४ भागमें	०	नागरी २ भाग	०	लावनी नवीन वि	≡।।)	इन्दर सभा नाटि०	=।।)
ख़याल बत्तीसी	१)	मजमूआ गुलश	=)	लास प्रथमभाग	०	परियोंकी हवाई	≡)
४ भाग में ···	०	न राग क़ीमन	०	नथा दूसराभाग	≡)	मजलिस क़ीमन	०
ख़यालात तुर्रा	।।।)	लावनी नवीन	।=)	नथा नीसराभाग	=।।)	और बहुत नाटि	०
४ भागमें ···	०	बिलास २भाग	०	लावनी ब्रह्मज्ञान	≡)	क हैं जो कम्पनि	०
सियास्वयम्वर	≡)	लावनी मजमूआ		प्रथम भाग क़ी·	०	यों बम्बई की नमा	०
सांगीत बड़ा ··	०	हरदिलपसन्द	०	नथा दूसराभाग	।-)	शा दिखानी हैं पर	०
मनोहरबाग ··	।।=)	तुर्रा क़ीमन ··	।)	नथा नीसराभाग	≡)	स्तानका वह ह	०
४ भागमें ···	०	रामायण का ख	।)	नथा चौथाभाग	-।।)	मारे यहां नागरीमें	०
बारहमासा रा	।=)	यालान तुर्रासुख	०	नथा पांचवांभाग	-।।)	सब मौजूद हैं ।	०
मायण का पूरा २	०	लालकृन की०	०	इन सबोंका मुस		जादूके नमाशे की	।)
गुलशन ख़याला	।।)	ख़यालान ब्रह्मज्ञा	।।)	न्निफ बाबा बनार		पहली किनाब ·	०
न तुर्रा मुन्शी ^	०	न प्रकाश सुखला	०	सी गिर गुसांई हैं		नथा दूसरी किनाब	।)
सुखलालकृत न	०	लकृत क़ीमन ०	०	लावनी रिसाल	-॥)	नथा नीसरी किना०	।-)
चारभागमें ।	०	मजमूआ गुलश	।।-)	सागर क़ीमन	०	शाहंशाह जादू	≡)
बुस्तान लावनी	।)	न ख़यालान तुर्रा	०	लावनी ब्रह्मप्रका	-)	लागबाज़ी हिन्द	=।।)
तुर्रा क़ीमन ··	०	नीन भाग क़ीमन	०	श क़ीमन ····		की पहली किनाब	०
ख़यालात गुल	।=)	गुलशन ख़याला	≡)	लावनी हरदिल	=)	नथा दूसरी किना	≡)
शनबहार तुर्रा	०	न तुर्रा क़ीमन ·	०	पसंद क़ीमन ०	०	ब लागबाज़ी की	०
दो भाग में क़ी०	०	सालंगा बड़ा ··	।-)	नासबत्तीसी नाट	=।।)	इस किनाब में ^	
ख़यालान गुल	।=)	सांग गोपीचन्द	१≡)	क इसमें नासके	०	होली दिवाली मु	
ज़ार चमन तुर्रा	०	बालकराम का	०	नमाशे हैं जो अंग	०	हर्रिमोंमें लागें	
दो भाग क़ीमन	०	सांग निहालदे	≡)	रेज़ दिखाने हैं।	०	दिखाई जानी हैं।	
राग मनोहर क़ी·	≡)	निहालदे गाने की	≡)	नथा दूसरा भाग	=।।)	और हर एक मेल की	
लावनी ज्ञानप्रकाश	=)	सांग सुलोचना	=)	किस[illegible]	।=)	किनाबें यहां मौजूद हैं	

नवीन पुस्तकों के नाम

बृहज्जातक

संस्कृत मूल - भाषा टीका सहित - छापा अति उत्तम - क़ीमत १)

मनुस्मृती

संस्कृत मूल - भाषा टीका सहित - अतिशुद्ध छापा बंबई - क़ीमत ३)

इन्द्रजाल

बहुत बड़ा चारोंभाग छाप: मुथराजी - ऐसा बड़ा इन्द्रजाल कभी आजतक नहीं छपाथा - जिसमें यंत्र - मंत्र - तंत्र - मारण - मोहन - वशीकरण - उच्चाटन - चेटक - नाटिक - और लागबाज़ी उम्दा २ भानमती के अद्भुत २ तमाशे हैं - और सब रोगों के झाड़े आज़मूदा - बड़ा शुद्धता से छपाहै - ६०० सफ़ों में है - क़ीमत ५) रुपया है ॥

मुजर्रबात सनत्कारी

इस पुस्तक में तरह तरह की कारीगरियां हैं - जो हिन्दुस्तान में आजतक कभी नहीं छपी थी इसमें लिखी हैं - अगर कोई शख़्स एक नुसख़ा भी इस किताब का अच्छी तरह सीख ले तो हज़ारों रुपये घरबैठे कमा सकता है - ग़रज़ इस किताब में - सोना - चांदी - तांबा - गिलट - जरमन सिलवर वग़ैरा सब धातुओं का नक़ली बनाना गलाना ढालना - इसी प्रकार हीरा - मोती - मूंगा - नीलम वग़ैरा सब रत्नों का नक़ली मुताबिक़ असली के बनाना। सब रंगकी आतिशबाज़ी रूमी विलायती देशी बनानी - शोधका साबुन ख़ुशबूदार बनाना। उमदा उमदा ख़िज़ाब बनाना - सब रंग रोग़न मेज़ कुरसी रंगने के। दिये सलाई बनानी - रंगीन स्याही नक़शे बनाने की - सुनहरी स्याही - सब रंग ऊनी सूती रेशमी कपड़ा रंगनेको - सुनहरी - रुपहरी - गुलकारी का ठंडा मुलम्मा करने की तरकीब बैट्री के नक़शों समेत सब लिखी हैं। सब रंगकी लाख बनानी - हाथीदांत सींग गलाना ढालना। और कितनेही नुसख़े आज़मूदा लिखे हैं - ग़रज़ कहांतक लिखें देखने लायक़ किताब है। क़ीमत २)

पुस्तक गर्भरक्षा

गर्भवती और जच्चाओं के जान बचाने वाली पुस्तक

यह पुस्तक हर मनुष्य को अपने पास ज़रूर ज़रूर रखनी चाहिये क्योंके हमारे हिन्दुस्तान में कोई पुस्तक नागरी में आजतक वास्ते हिफ़ाज़त जच्चों और बच्चों के नहीं छपीथी। कि सैंकड़ों जच्चा औरतें इस मर्ज़ में मरती हैं - इस वास्ते इस पुस्तक में गर्भ की हिफ़ाज़त का पूरा पूरा इलाज - और बच्चा पैदा होनेका - और उसकी परवरिश का पूरा २ इलाज और बच्चोंकी बहुतसी बड़ी बड़ी बीमारियों का इलाज तजुर्बःकार लिखा है - क़ीमत १≡)

रमलसिन्धू

इस पुस्तक में रमल के क़ायदे से प्रश्न का उत्तर निकालने की बड़ी सुगम रीति लिखी है और हरएक प्रकार के प्रश्नका उत्तर बड़ा सत्य २ और ठीक २ निकलता है और इसीमें अंग के फड़कनेका फल और बदन के तिल और मस्सों का शुभा शुभ फल लिखा हुवा है क़ी० ०)

[illegible] जो [illegible] इस पुस्तक के ख्यालों को याद करे या और को याद [illegible] हेल

इस शुद्धाशुद्ध पत्रसे पुस्तक की शुद्ध करलें पीछे सीखें।

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	१३	महाशा	महेशा	२०	१०	जमन	जमुन
३	१	वस्त्रषिश्र	बस्त्रषिश्र	२३	११	ख्याल ६	ख्याल ११
३	२	मैारिज़	मैानरिज़	२६	१	ख्याल ८	ख्याल १२
[illegible]	२	कुब्ने	कुब्नो	२६	१२	दुशम	दुशमन
	११	सोंहे	सोहै	२७	७	कुबजा अवनी	कान्हा अबनी
	८	वय	वटा			कान्हा	कुबजा
	२०	शुभकर	शुभकरन	२८	२	ख्याल १०	ख्याल १३
	६	आर	और	२८	७	डरैमनमारा	डरैमनमोरा
	२७	कहाई	कहाई	२८	२१	गुडाओ	गुडाओ
	२०	आभलाखना	आभिलाखनाम	२८	२२	स्वाति	स्वांति
		मनति	पर । नति	२६	४	ख्याल १०	ख्याल १४
१०	६	बिह्मु	बिष्णु	२६	११	बार: मास	सबमास
[illegible]	१५	थके	पकै	३०	१२	सोली	सेली
[illegible]	२६	बिह्मु	बिष्णु	३०	१६	खफाभय	खफाभयेपिया
[illegible]	८	पके	पकै	३०	२१	ख्याल ११	ख्याल १५
[illegible]	१५	बिह्मु	बिष्णु	३१	१३	निजगनी	निजरानी
	७	रंधारन	संधारन	३५	२०	जहाँ	जहाँ चैन
१२	८	भठ	भट	३६	८	जोसे	जैसे
१३	४	गणिकागग	गणिकागज	३७	४	याने याने	याने
१३	७	ख्याल ५	ख्याल ६	३६	१३	क्योंकि	क्या कि
१३	११	सरकाज	सुरकाज	४१	२१	नजानतेहैं	न बुरा जानतेहैं
१३	१७	जगभर्क्ता	जगभर्ता	४२	२४	सत्यगुण	सत्वगुण
१४	२	मृगादि	मृगारी	४०	२	बैठ	बैठे
१४	४	जन्नदुख	जनदुख	४५	२	तेरह	तेर
१४	१२	पालन	पालनकर्ता	४५	१२	रेक	रोक
१४	२१	ख्याल ६	ख्याल ७	४५	२५	रेक	रोक
१५	१	गौरि	गोरि	५०	१८	मल	मूल
१५	२	भवा	भेवा	५२	३	खयालहै	ख्यालहै
१६	१	कह	कहि	५२	१२	अपकाकारीहैं	अपकजारीहैं
१६	२१	ख्याल ६	ख्याल ८	५२	१३	जोनेसे	जीनेसे
१६	१८	कामयक	काम इक	५५	१२	हया	हया
१६	२०	उमेहनि	उसेहन	५७	६	एक धोखा	एकदिन धोखा
१८	१२	ख्याल ७	ख्याल ८	५७	८	ख्यलि	ख्याल
१६	३	लाकी	लागी	५८	६	बजून	भौन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५८	१०	यम	यस
५८	२४	नालां	नाला
५९	२५	नहीं	नहिं
५९	२७	स्दिन	दिन
५९	२०	हिज्रमें	हिज्रमें
६०	१९	नूकुछहैफ़	कुछनूहैफ़
६०	२१	नग़ाय	ज़वय
६१	२	खुदही	खुदहो
६१	३	फिरणपरे	फिरपरे
६१	६	रबये	रवये
६१	१२	रानदिनमें	रात और दिन
६१	२०	उसका हैफ़	हैफ़ उसका
६४	२	कियाहै	कियाजो
६४	४	वाँकी	बाँको
६४	१८	तुम्हरि	तुम्हारे
६६	४	सुल्वल	सुम्बुल
६६	५	तपा	तपाँ
६७	३	तुकपर	तुफ़पर
६७	३	जानि	जानो
६७	४	वपा	क्या
६७	११	नशामवद	नशानवस
६७	१३	नीक़रार	भीक़रार
६७	१६	अथदुल	अबदुल
६८	२१	रजा	रंजो
६९	१	मरज़	ग़र्ज़
७२	५	बीभारों	बीमारों
७२	१७	रपाना	खाना
७२	१८	दिलफा	दिलका
७४	१	बसानि	बसाने
७४	६	भुफ़को	मुफ़को
७४	६	ज़ुलो	ज़ुल्फ़ों
७४	२१	बूमसा	बूटासा
७४	१८	मरभो	नैरीभी
७४	२९	टीहोती	नौहोती

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७४	२१	जपतक	जबतक
७४	२१	मनेरा	नमेरी
७५	१	सवनि	सबने
७५	१	मेरो	मेरी
७५	५	हमोसी	हमीसे
७५	६	कानरीयाँत्नत	को नोरी चांह.
७५	७	याकोई	य, कोई
७५	८	जकोई	नकोई
७५	८	याफ़िक	वाक़िफ़
७५	९	योनसूरत	थीनसूरत
७५	१०	ज़ारां	ज़ारों
७५	१४	उमको	उनको
७५	१५	अथादत	अदावत
७५	१६	मरीहै	भरीहै
७५	१७	मज़क	नज़िक्र
७६	९	जहांतलकहो	होजहांतक
७६	१२	रूषे	रूपे
७६	१९	ख़ुदाख़ुदापै	ख़ुदाख़ुद [illegible] प आप
७८	२१	आपखाई	उससे खाई
८३	१	नरगिसी	नरगिसे
८३	२	मुहनाव	महताब
८४	३	शरवते	शरबते
८५	२१	नूआप	नू पआय
८६	१८	कानफिर	कोनफिर
८८	१८	हया	हया
९०	१	उस	उसै
९०	२६	जिसका	जिसके
९३	१६	सवलोग	यहलोग
९३	१९	शम्मा	शिम्मा
९६	५	बरबाद	दरबार
९६	६	बोन	बाज
९७	२	गिम	गिस